ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -24 | अंक - 04 | मई-II-2022 | (पाक्षिक) | माउण्ट आबू | Rs. 8.50

सकारात्मक परिवर्तन के लिए आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाना ज़रूरी

ब्रह्माकुमारीज़ के स्पार्क विंग द्वारा 'स्पीरिचुअलिटी इन रिसर्च' सेमिनार

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ के स्पार्क विंग द्वारा ओम शांति रिट्रीट सेंटर में 'स्पीरिचुअलिटी इन रिसर्च' विषय पर आयोजित सेमिनार में अंगोला के मंत्री सलाहकार जोआकिम फ़िलिप,उच्चायोग,नई दिल्ली ने कहा कि सकारात्मक जीवन जीने के लिए नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य ज़रूरी हैं। आध्यात्मिक शक्ति से जीवन में अनुशासन आता है। उन्होंने कहा कि जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए हमें स्वयं के भीतर जाकर आंतरिक गुणों को जागृत करने की आवश्यकता है। स्टारेक्स युनिवर्सिटी, गुरुग्राम के वाइस चांसलर डॉ. एम.एम. गोयल ने 'मेरी नज़र में स्वर्णिम भारत' विषय पर सम्बोधित करते हुए कहा कि शिक्षा में आध्यात्मिक मूल्यों के समावेश से ही हम एक बेहतर विश्व की आधारशिला रख सकते हैं। संस्कार परिवर्तन से ही संसार परिवर्तन होगा। संस्थान के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने कहा कि परमात्मा ने जब सृष्टि को रचा तो उसका स्वरूप बहुत ही सुंदर और स्वर्णिम था। लेकिन मानव ने अपने कर्मों के द्वारा आज उसे इस स्तर तक पहुंचा दिया। उन्होंने कहा कि अपने श्रेष्ठ कर्मों के आधार से ही हम इसको फिर वही स्वरूप प्रदान कर सकते हैं। ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था विचारों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देती है। श्रेष्ठ विचारों के आधार से ही हम कामयाबी के शिखर पर पहुंच सकते हैं। कोई भी संकल्प जब सामूहिक रूप से किया जाता है तो परिवर्तन अवश्य होता है। उन्होंने कहा कि संकल्प के साथ-साथ इच्छा शक्ति का होना भी ज़रूरी है। डॉ. रामचन्द्रन,उत्कृष्ठ वैज्ञानिक एवं निदेशक, डिफेंस इंस्टीट्यूट,साइकोलॉजिकल ऑफ रिसर्च,डीआईपीआर,डीआरडीओ ने कहा कि स्वर्णिम भारत बनाने में हम योगदान देना चाहते हैं तो उसके लिए अपने विचारों को रिफाइन करने की आवश्यकता है। डॉ. अनिल कुमार मिश्रा,वैज्ञानिक और निदेशक, परमाणु चिकित्सा एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान,आईएनएमएएस,डीआरडीओ ने बताया कि हमें सिर्फ भारत को ही स्वर्णिम नहीं बल्कि सारे विश्व को स्वर्णिम बनाना है। सबके प्रयास से ही ये कार्य संभव होगा। स्पार्क विंग की अध्यक्ष ब्र.कु. अम्बिका बहन ने विंग की गतिविधियों की जानकारी देते हुए कहा कि विंग के माध्यम से हम विज्ञान के साथ आध्यात्मिकता के समन्वय द्वारा एक समग्र समाज की स्थापना करना चाहते हैं। ब्र.कु. सरोज बहन ने सभी मेहमानों का स्वागत किया। इस अवसर पर मारूति सुज़ुकी के एक्ज़ीक्युटिव डायरेक्टर तपन साहू ने भी कार्यक्रम के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं। ब्र.कु. अनीता बहन एवं ब्र.कु. अल्का बहन ने सभी को राजयोग के अभ्यास द्वारा आत्मिक अनुभूति कराई। डॉ. सुशील चन्द्रा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डीआरडीओ ने कहा कि वे काफी समय से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े हैं और यहाँ ये जाना है कि आध्यात्मिकता एक सकारात्मक दृष्टिकोण है जो स्वयं के प्रति और दूसरों के प्रति हमारी सोच में परिवर्तन लाता है। कार्यक्रम संचालन ब्र.कु. रूपेश ने किया।

आज़ादी के अमृत महोत्सव एवं 'भाग्यविधाता' का भव्य शुभारंभ

बैतुल-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव एवं नव निर्मित भवन 'भाग्यविधाता' के शुभारंभ अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यकारी सचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय भाई ने कहा कि भाग्यविधाता परमात्मा पिता ने अपने संकल्पों से 'भाग्यविधाता भवन' का निर्माण करवाया है। आज़ादी के अमृत महोत्सव के शुभारंभ पर इस भवन का उद्घाटन ईश्वरीय सेवाओं को नया आयाम देगा और निश्चित ही परमात्म प्रत्यक्षता का साधन बनेगा। आज आज़ादी के अमृत महोत्सव पर हम संकल्प लें कि हम क्रोध मुक्त, ईर्ष्या द्वेष, विकार से मुक्त भारत बनायेंगे। भोपाल ज़ोन की निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश दीदी ने सभी बैतुल के भाई-बहनों को बधाई देते हुए कहा कि ये बहनों की तपस्या का ही फल है जो इतना सुंदर भवन बनकर तैयार हुआ। ये सत्यम् शिवम् सुंदरम् की सुंदरतम् रचना है जो इस संगम समय पर अनेकों का भाग्य जगाने और प्रभु मिलन कराने का साधन बनेगा। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी,मा.आबू ने अपनी शुभ भावनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि अब आवश्यकता है कि हम बुराइयों से मुक्त हो सच्ची आज़ादी मनायें। आज हर मनुष्य पाँच विकारों का गुलाम है और जब तक इन विकारों से आज़ादी नहीं मिलेगी हमारा भारत स्वर्णिम भारत, स्वर्गिक भारत नहीं बन सकता। इस मौके पर सांसद डी. डी. उइके, विधायक निलय डागा, विधायक योगेश पंडाग्रे,आमला, पुलिस अधीक्षक सिमाला प्रसाद एवं भोपाल ज़ोन के सभी वरिष्ठ बहनें एवं भाई मुख्य रूप से उपस्थिति रह अपने विचार रखे।

'गीता ज्ञान की एक शाम' कार्यक्रम का आयोजन

'गीता ज्ञान की एक शाम' का 'भाग्यविधाता भवन' के विशाल सभागृह में अगले दिन आयोजन हुआ जिसमें राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी,मा.आबू ने कहा कि गीता हमें स्वयं की पहचान कराती है। गीता के माध्यम से परमात्मा पिता हमें हमारे अन्दर निहित गुणों की, शक्तियों की पहचान कराते हैं और हमें राजयोग सिखाते हैं। परमात्मा हमें ज्ञान, पवित्रता और प्रेम के आधार पर जीना सिखाते है, यही सच्चे सुख का आधार है। इस कार्यक्रम में शहर के विशिष्ट लोगों और बुद्धिजीवियों को आमंत्रित किया गया जहां सभी ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए ऐसे कार्यक्रम को पुनः पुनः आयोजित किये जाने की इच्छा ज़ाहिर की।

तीन बहनें हुईं परमात्मा शिव को समर्पित

उद्घाटन महोत्सव के अवसर पर बैतूल की तीन बहनों ब्र.कु. प्रतिभा, ब्र.कु. रोशनी व ब्र.कु. दिव्या का दिव्य समर्पण हुआ। सभा में उपस्थित महान विभूतियों के मध्य इस समारोह में भव्य शिव बारात का आयोजन किया गया। समर्पित हो रही बहनों ने शिव लिंग के फेरे लगाते हुए ईश्वरीय जीवन प्रति 7 प्रतिज्ञाएं लेकर स्वयं को ईश्वरीय सेवा अर्थ परमात्मा शिव के हवाले कर दिया।

ब्रह्माकुमारीज़ ने बुज़ुर्गों के साथ मनाया 'वर्ल्ड हैप्पीनेस डे'

प्राचीन धरोहरों की तरह बुज़ुर्गों को भी संरक्षण की आवश्यकता

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत 'वर्ल्ड हैप्पीनेस डे' पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. कल्पना बहन ने कहा कि हम वर्ल्ड हैप्पीनेस डे वृद्धजनों के साथ मना रहे हैं क्योंकि वर्तमान समय सभी लोग अन्य चीज़ों में अपनी खुशी ढूढ़ लेते हैं लेकिन उनके पास बुज़ुर्गों के लिए समय नहीं है। हम उन्हें अपने से दूर करते जाते हैं लेकिन हम यह नहीं समझते कि अपने परिवार से दूर रहकर वह और जल्दी बूढ़े हो जाते हैं क्योंकि उन्हें अकेलापन अंदर से कमज़ोर कर देता है और वे अपने को अपेक्षित महसूस करते लगते हैं। इसीलिए ब्रह्माकुमारीज़ ने यह दिन बुज़ुर्गों के साथ मनाने का सोचा। कार्यक्रम में भारतीय धरोहर दिल्ली के पूर्व डायरेक्टर,इग्नू के पूर्व डायरेक्टर,पूर्व लोकपाल महाराजा छत्रसाल विश्वविद्यालय छतरपुर डॉ. कृपा शंकर तिवारी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी उत्तराधिकारी चरण पादुका सेवा समिति एवं पेंशनर्स एसोसिएशन सम्भागीय अध्यक्ष समन्वय समिति शंकरलाल सोनी, पूर्व डी.ई.ओ. शिक्षा विभाग आर.के. मिश्रा, पेंशनर्स एसोसिएशन के जे.पी. मिश्रा, दर्शना महिला समिति अध्यक्ष श्रीमति प्रभा वैद्य आदि उपस्थित रहे एवं अपने विचार रखे। ब्र.कु. रीना बहन ने कहा कि जिस प्रकार हमारे देश की पुरानी इमारतों को हम धरोहर के रूप में संरक्षित रखते हैं उसी प्रकार बुज़ुर्गों को भी हमारे संरक्षण की आवश्यकता है। हम सभी का कर्त्तव्य है कि हम उनकी सेवा करें और उन्हें अपने परिवार से दूर ना करें। ब्र.कु. भारती बहन ने परमपिता परमात्मा शिव का परिचय दिया। मौके पर दर्शना वृद्ध आश्रम के वृद्धजन एवं शहर के अनेक बुज़ुर्ग उपस्थित रहे। ब्र.कु. रजनी बहन, ब्र.कु. मोहिनी बहन एवं ब्र.कु. पूनम बहन द्वारा अनेक प्रकार की खुशियों से सम्बंधित और ज्ञानवर्धक एक्टिविटीज़ कराई गई जिसमें सभी बुज़ुर्गों ने भाग लिया और बहनों के साथ डांस करते हुए होली भी मनाई।

परमात्म प्रीति से जीवन परिवर्तन

आप देखेंगे कि जीवन को पतित से पावन, विकारी से निर्विकारी तथा भोगी से योगी बनाने का जो पुरुषार्थ है वह बहुत हद तक प्रभु प्रीति पर आधारित है। उसके लिए प्रायः यह कहा जाता है कि मनुष्य अपने जीवन में त्याग की भावना लाये। परंतु मनुष्य त्याग तो प्यार के आधार पर ही करता है। जब प्रभु की प्रीति में उसका मन जुट जाता है, तभी तो वह लोक-लाज, कलियुग की कुल मर्यादायें(आसुरी मर्यादायें), मान-अपमान का विचार, फैशन, चस्के और स्वाद का त्याग करता है। जैसे मीरा को प्रभु से प्रीत हो गई तो भव्य राजदरबार भी उसे फीका लगने लगा और उसका त्याग हो गया।

अन्य लोग कहते हैं, ईश्वरीय मार्ग में दृष्टि और वृत्ति को पवित्र करना ज़रूरी है, परंतु दृष्टि-वृत्ति तो तभी विकृत होती है जब मनुष्य का प्यार विकृत होता है।

ब्र.कु. गंगाधर

अर्थात् जब उसका प्यार काम, क्रोध, लोभ या मोह का रूप धारण कर लेता है। अतः यदि मनुष्य की प्रभु से प्रीति होती है तो स्वाभाविक है कि मनुष्य से भी उसका शुद्ध प्यार होता है। इसका भाव यह हुआ कि उसकी दृष्टि-वृत्ति भी शुद्ध हो जाती है। यानी कि उनका व्यवहार विनाशी वस्तु व विनाशी देह से ऊपर उठकर अविनाशी व सुखदायी होता है।

कई बार यह भी कहा जाता है कि निराकार, निरहंकार और निर्विकार स्थिति ही पुरुषार्थ का सार है। किंतु काम, क्रोध आदि सभी विकार तथा अहंकार दैहिक प्रेम से पैदा होते हैं और प्रभु प्रीति से ही ये विकार शांत होते हैं। फिर चूंकि परमात्मा निराकार है, अतः उनकी प्रीति तथा स्मृति में हमारी स्थिति निर्विकार और अतिरिक्त निराकार अर्थात् विदेही स्थिति होती है। उसका देह एक लाइट के समान होता है यानी कि इस संसार में रहते भी संसार से उपराम होता है और ईश्वरीय प्रेम के कारण वो ईश्वर के प्रति समर्पित रहता है। परमात्मा के आदेश, उपदेश व संदेश में ही उसका जीवन समर्पित होता है। ये सब परमात्म प्रेम के कारण ही त्याग हो जाता है।

ऐसा भी कहा जा सकता है कि 'मरजीवा जन्म' लेने से ही मनुष्य के जीवन में परिवर्तन आता है। परंतु 'मरजीवा जन्म' लेने का भाव भी तो यही है कि देह के सर्व सम्बंधों में से प्रीति को निकाल कर एक परमात्मा, परम सखा, परम सद्गुरु परमात्मा ही से सर्व सम्बंध जोड़े जायें। अर्थात् सर्व सम्बंधों में होने वाली प्रीति एक ईश्वर ही पर केन्द्रित हो। इन सांसारिक सम्बंध, सम्पर्क से उनकी बुद्धि उपराम हो जाती और वही सम्बंधों का रस वो प्रभु से पाता है। रहेगा तो यहीं, परंतु परमात्मा के शुद्ध अलौकिक आकर्षण में ही उसकी प्रीत जुटी होगी। तो परमात्म प्रेम ही जीवन परिवर्तन का आधार हो जाता है।

आप देखेंगे कि आध्यात्मिक पुरुषार्थ में मनुष्य के मार्ग में जो विघ्न आते हैं, वे भी प्रीति ही से सम्बंधित होते हैं। मनुष्य जब प्रभु से प्रीत लगाता है तो उसके नातेदार, रिश्तेदार सोचते हैं कि शायद ये हमें छोड़ देगा, इसीलिए वे रुकावटें डालने लगते हैं या तो मनुष्य का अपना मन पिछली प्रीतियों यानी काम वाले सम्बंध अथवा मोह वाले सम्बंधों के प्रति पुनः आकर्षण अनुभव करता है। या ऐसा भी होता है कि उसका अपनी देह से प्यार(लगाव) होता है और उसके रोग अथवा अन्य किसी कठिनाइयों के कारण वह योग इत्यादि में विघ्न अनुभव करता है। एक तरह से उसके मन में द्वन्द्व चलता है। सांसारिक आकर्षण की प्रीतियों व ईश्वरीय आकर्षण की प्रीतियों के बीच युद्ध जैसी स्थिति अनुभव करता है।

इस तरह से अगर देखा जाये तो जीवन परिवर्तन परमात्म प्रीति के आधार पर ही होता है। जहाँ प्यार है वहाँ सब न्यौछावर हो जाता है। जैसे माँ का बच्चों के प्रति प्यार कई कुर्बानियाँ करा देता है। जीवन परिवर्तन प्रभु प्रेम पर ही टिका है। अन्यथा तो हम न इधर के, न उधर के रह जाते हैं। अतः शुद्ध प्रेम में किये गये पुरुषार्थ द्वारा ही जीवन परिवर्तन होता है।

इस... भूमि के कोने - कोने में समाये हैं- वरदान

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

इस मधुबन वरदान भूमि के कोने-कोने में वरदान भूमि में समाये हुए हैं। इसलिए यहाँ से सबको बहुत कुछ प्राप्तियां हो जाती हैं। यहाँ इतना बड़ा परिवार मिलता है, उन सभी ब्राह्मण आत्माओं की शुभ भावनायें और शुभी कामनायें जो एक-दो के प्रति हैं, वह भी बहुत ही कुछ आत्मा में बल भरती हैं इसलिए इस भूमि का नाम ही है मधुबन,वरदान भूमि। तो जहाँ वरदान ही वरदान हैं, हर सेकण्ड में, हर कर्म में आप इस वरदान भूमि द्वारा अपने को वरदानों से भरपूर कर सकते हो। अभी कौन, कितना क्या करता है और क्या बनता है, वह तो खुद और खुदा ही जाने। खास यहाँ पर बेफिकर बादशाह की स्थिति का बहुत अच्छा अनुभव कर सकते हैं, करना चाहिए। यहाँ से जो जितना भरपूर होकर जाते हैं उतना फिर वह वहाँ जाकर सबको भरपूर करने की सेवा करते हैं।

तो भगवान का वरदान अगर हम नहीं स्वीकार करेंगे तो क्या स्वीकार करेंगे! भगवान के होते भी अगर हम जो बनना चाहें, जो परिवर्तन करना चाहें वह नहीं करते हैं तो कब बनेंगे और क्या करेंगे? तो हमेशा पहले यह सोचना चाहिए कि हमारा स्वमान क्या है! बाबा हमें क्या बनाना चाहते हैं! हमसे क्या कराना चाहते हैं? हम जो चाहते हैं वह क्यों नहीं हो रहा है? गायन है कि जब स्वयं भगवान ने भाग्य बांटा तब तुम कहाँ थे? तो क्या यह गायन हमारा तो नहीं है? समस्या के समय क्यों, क्या को यूज़ न करके समाधान स्वरूप बनो। ज्ञान को स्पष्ट करने में भल यह क्यों, क्या यूज़ करो इससे भाषण तैयार हो जायेगा। मैं और मेरा में ममता न हो, नहीं तो बोझिल हो जायेंगे। बोझ से थकते हैं तो फिर कहेंगे बाबा, बाबा... अब कुछ करो। बाबा जो कहते वो न करके हम अपना दूसरा ही कुछ करेंगे तो क्या होगा! इसलिए किसी बात में संशय की उत्पत्ति कभी भी न हो क्योंकि इससे संकल्प हल्के होने कारण ढीले-ढाले पुरुषार्थी रह जाते हैं फलस्वरूप किसी बात में हमें सफलता नहीं मिलती है। तो बहुत समय का एकरस पुरुषार्थ चाहिए तब ही अन्त मते सो गति अच्छी होगी। इस अकाले मृत्यु के समय में कभी भी किसी का कुछ भी हो सकता है। इसलिए हमें अपनी कमज़ोरियों को खत्म करके विशेषताओं को देखते अपने को विशेष आत्मा बनाने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

जिसके ऊपर भगवान की नज़र पड़ी है वही तो यहाँ आकर पहुंचे हैं। इसलिए अभी सभी अपनी विशेषता को जानो और उसको कार्य में लगाओ, अभिमान में नहीं आओ तो विशेषता बढ़ती जायेगी और बुराई दबती जायेगी। इसलिए बाबा कहते हैं आप सदैव अपने स्वमान में रहो। ब्राह्मण जीवन की सम्भाल करो। समय की भी पहचान रखो।

सच्चे बनो, सहयोगी बनो और स्नेही रहो

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा से जो हम बच्चों को अच्छी-अच्छी शिक्षायें मिल रही हैं यही बाबा का प्यार है। बाबा कितना प्यार से शिक्षा देते हैं, बच्चे जो बात तुम्हारे काम की नहीं है वो नहीं करो। गुस्से की ज़रा भी परसेन्ट न रहे, इतनी योग अग्नि हो, जो हम सुख-शांति, शीतलता के देव बन जायें। तीनों चीज़ें हमें बाबा से वर्से के रूप में मिल जायें। शिवबाबा, भाग्यविधाता और वरदाता है, तो कोई बड़ी बात नहीं है।

हर आत्मा शरीर द्वारा अपना-अपना पार्ट बजाती है, हरेक का पार्ट अपना है। बाबा हमारा शिक्षक और सतगुरु है। धर्म और राज्य दोनों की स्थापना करने वाला वही धर्मराज है। पर हमको स्वधर्म में स्थित होके, स्नेह और आपसी सहयोग से सतयुगी राजधानी स्थापन करनी है। हम योगी भी बाबा के सहयोग से ही बने हैं।

यहाँ कोई कर्म को छोड़ करके योगी नहीं बना है। हमारे कर्मयोग से अनेक पुराने जन्मों के विकर्म विनाश हो गये, संस्कार शुद्ध हो गये। अगर कुछ रहा हुआ है तो अन्दर खिटपिट होगी ज़रूर। अगर पुराना खलास हो गया तो आत्मा शुद्ध, शांत और शीतल है, फिर जो भी उनके संग में आते हैं वो भी ऐसे बन जाते हैं। यह कमाल है हमारे बाबा की। बाबा के संग में रहते-रहते अच्छा रंग चढ़ गया है। बाबा के सामने कोई उबासी नहीं दे सकता था, किसी की आँख बंद नहीं होती थी। तो हमारी यह स्टूडेंट लाइफ भविष्य का निर्माण करती है। बाबा ने कर्मों की गुह्यगति का ऐसा ज्ञान दिया है, अच्छी तरह से बता दिया है ताकि अभी हर समय, हर सेकण्ड मन-वचन-कर्म से श्रेष्ठ बन करके रहें।

सर्वशक्तिवान बाबा में सारा ज्ञान है, वह नॉलेजफुल है पर असोचता है। बाबा करन -करावनहार है, पर अकर्ता है। ऐसे ही दुःख-सुख में नहीं आता है इसलिए अभोक्ता है। तो हम बाबा के बच्चों की भी ऐसी स्थिति आ सकती है, इसके लिए बहुत गहराई में जाना होगा। ड्रामा में क्या है, जो सीन चल रही है वो बाबा हर क्षण बता रहा है, सिखा रहा है कि तुम ऐसे चलो। अच्छे एक्टर्स का ध्यान डायरेक्टर के गुप्त इशारों पर होता है। ड्रामा का डायरेक्टर, क्रियेटर ही अब मुख्य एक्टर के रूप में पार्ट बजा रहा है, उसको अगर न जाने तो वो कौन है? बाबा का कितना बड़ा पार्ट है वो हम सब जानते हैं। बाबा ने बताया है और हम देख रहे हैं। उनकी हर एक्शन में हम भी शामिल हैं।

भक्त जिनका दर्शन करने के प्यासे हैं, हम उनके साथी बने हैं तो हमारे कर्म कितने ऊंचे व बलवान होने चाहिए। ऑलराउण्ड पार्ट में एक्यूरेट और एवररेडी रहना शोभता है। तो जो कर्म हम करते हैं, वो अपने लिए करते हैं। बाबा ने जो इशारा दिया है, उसी अनुसार करते हैं। सुबह उठने से लेके रात्रि तक जैसे तुम करोगे तुमको देख और करेंगे। बाबा ने आत्मा को अपना बनाके समझदार बनाया है तो सच्चे बनो, सहयोगी बनो और स्नेही रहो।

हमारा हर कर्म हो शुभ भावना और शुभ कामना से...

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

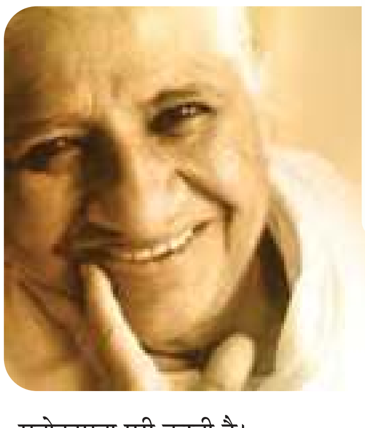

किसी दिन संकल्प करो कि आज बेहद की दुनिया से उपराम रहना है। आज सारे दिन गंभीर, धैर्यवत रहना है। आज विश्व के कल्याण के लिए सारा दिन शुभ भावनाओं का दान देना है। आज सबको शांति का दान देना है।

बाबा कहते बच्चे, तुम अपने स्वमान में, नशे में रहो। अपनी स्वस्थिति स्वमान पर रखो तो हर प्रकार की माया से ऊपर रहेंगे। माया हमारी परछाई है, उसको पीठ दे दो तो पाँव पड़ेगी लेकिन उसका स्वागत करो तो सिर पर चढ़ेगी।

हम तो देवता बनने वाली आत्मा हैं, हमारे सिर पर लाइट का क्राउन है, रावण के सिर पर गधे का शीश है। बाबा हमें अपने गोल्ड हस्तों से रोज़ अमृतवेले लाइट-माइट से सिर की मालिश कर ताज पहना देता है। हम लाइट-माइट का ताज पहने हुए महावीर महावीरनियां हैं।

रोज़ अमृतवेले विशेष संकल्प लो कि हमें अन्तर्मुखी रहना है, स्वचिन्तन करना है। कभी बाह्यमुखता में नहीं आओ। किसी दिन संकल्प रखो कि आज कम बोलेंगे, धीरे बोलेंगे, मीठा बोलेंगे। फिर सारे दिन यह प्रैक्टिस करो। किसी दिन संकल्प करो कि आज बेहद की दुनिया से उपराम रहना है। आज सारे दिन गंभीर, धैर्यवत रहना है। आज विश्व के कल्याण के लिए सारा दिन शुभ भावनाओं का दान देना है। आज सबको शांति का दान देना है। कभी संकल्प करो आज हमें सब भक्तों का ईष्ट देव बन उनकी मनोकामना पूरी करनी है।

जन्म लेते ही बाबा ने कहा- आओ मेरे विजयी रत्न बच्चे आओ। तो यह विजय का वरदान हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। वरदानों का ताज सदा पहनकर रखो। हम विजयी थे, विजयी हैं, विजयी रहेंगे। फिर देखो कितनी शक्ति आ जाती है। जब खेलने जाते हैं तो कभी यह संकल्प नहीं करते कि खेल में हार होगी। माया अगर शेरनी है तो हम शेर हैं लेकिन माया तो बिल्ली है। हम तो अवतरित हुई आत्मायें हैं। अवतार माना ही पवित्र। हम पवित्र आत्मा थे, हैं और रहेंगे। माया को चैलेन्ज करो तो माया मन्सा में भी तूफान ला नहीं सकती।

हम सतयुग के सच्चे कोहिनूर हीरे हैं, आजकल के झूठे पत्थर नहीं हैं। ऐसे अनेक स्वमान हैं जिनकी स्मृति में रहो तो मन्सा शुद्ध हो जायेगी। विजयी माला के ऐसे मोती बनो जो दाना, दाने से मिल जाए। बीच में धागा बिल्कुल दिखाई न दे।

हम तपस्वी कुमार हैं, हमें तपस्या करनी है। कल कुछ भी थे राइट थे, रॉन्ग थे, बुरे थे उसे आज जीरो लगा दो। जीरो लगाने से हीरो बन जायेंगे। तीन बिन्दु का तिलक लगाओ- मैं आत्मा बिन्दु, बाबा बिन्दु और ड्रामा बिन्दु। यह तीन बिन्दु साथ हैं तो न स्थिति नीचे आयेगी, न डिस्टर्ब होंगे। न अपने को डिस्टर्ब करो न दूसरों को।

बाबा ने कहा है तुम छोटे-बड़े सब वानप्रस्थी हो। वानप्रस्थी माना सब झंझटों से परे। हम कोई मौनी बाबा नहीं हैं, लेकिन बाहर के वातावरण से परे हैं। जब वानप्रस्थी होकर रहना है तो फालतू बातों में, व्यवहारों में टाइम वेस्ट नहीं करना है। अपने समय को, शक्ति को सफल करना है। न टाइम वेस्ट हो, न एनर्जी वेस्ट हो। शुभ भावना, शुभ कामना से हर कर्म करो। पॉज़िटिव सोचो। वैर, विरोध, नफरत आदि की बातों में न जाओ।

यह है बहुत खराब स्वभाव

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

आजकल एक शब्द हमारी बातचीत में बार-बार आता है कि यह आपकी दुआ है, इसके लिए आपकी दुआ चाहिए, यह बड़ों की दुआ है। दुआ शब्द का इतना प्रयोग पहले नहीं था। होते-होते अभी काफी अधिक हो गया है। चलो, यह मानकर चलते हैं कि हम योगी लोग हैं, पवित्र लोग हैं, भगवान के बने हैं, उसकी आज्ञा पर चलते हैं, उनकी दुआ काम करती है। वो कुछ हमारे प्रति अच्छी भावना रखें तो वो भी सहायक होती है। ऐसा मान लेते हैं। फिर इसका मतलब यह भी तो निकलता है कि कोई ब्राह्मण कुलभूषण किसी के प्रति कुछ बुरा सोचता है, उसकी बद्दुआ भी लगती होगी। अगर दुआ होती है तो बद्दुआ भी होती होगी। मन में किसी के प्रति ऐसा है कि इसने हमें बहुत दुःखी कर रखा है, हम इससे बहुत परेशान हैं, इसने हमारे जीवन में बहुत क्लेश पैदा किया हुआ है, यदि ऐसी भावना निकलती होगी तो बद्दुआ भी निकलती होगी। कोई-कोई दुर्वासा ऋषि भी होंगे। अगर हम किसी को शत्रु मान लेंगे और हमारे मन में उसके प्रति दुर्भावना आ जायेगी, सद्भावना की बजाय, शुभ-आशय के बजाय तो इसका उस पर असर तो होगा, हम चाहें या न चाहें। कइयों को हमने मुख से स्पष्ट कहते हुए देखा है, जिससे उनकी अनबन हो, जिससे उनको दुःख होता हो, उसको बोल-बोलकर कहते भी हैं कि इसका ऐसा हो, वैसा हो। कई वचन तक नहीं कहते होंगे लेकिन मन में आता होगा कि उस आत्मा का, उस व्यक्ति का नुकसान हो। अगर दो-तीन, चार-पाँच साल तक उस व्यक्ति के प्रति इसने ऐसा सोचा तो यह बहुत घातक होगा। अगर आदमी किसी को तलवार मारता है तो सबसे पहले मन में सोचता है कि इसको तलवार मारूँ। बहुत लोगों ने कहा है कि जब आप मन में सोचें कि यह बुरा काम करें, तो वो बुरा काम हो ही गया। सिर्फ एक कदम का फासला रहा, अगर आपको मौका मिलता या और कोई रुकावट पेश नहीं आती तो आप कर ही डालते। इसका मतलब है कि मन से सोचना भी आधे करने के बराबर तो हुआ। किसी व्यक्ति के बारे में आपने बुरा सोचा माना उस व्यक्ति का आधा बुरा तो आपने किया ना? अगर किसी के प्रति शत्रुभाव रखेंगे, पाप करते रहेंगे और दुःख देने के संकल्प करते रहेंगे तो बाबा ने कहा है कि दुःख दोगे तो दुःखी होके मरोगे इसलिए न दुःख दो और न दुःख लो। फिर भी यदि हम उसको अपना शत्रु समझकर और ही दुःख दे रहे हैं तो इसके परिणामस्वरुप उसके मन में भी हमारे प्रति दुःख देने का चिन्तन चलता है। योग करके हम जो थोड़ी-सी कमाई, थोड़ी-सी शक्ति अर्जित करते हैं उस शक्ति से किसी का घात करने के लिए तुले हुए हों तो आप सोचिये योगी बनने का क्या फायदा हुआ? किसी को पिस्तौल दी जाती है सुरक्षा के लिए। परन्तु यदि वह घर वालों को ही बन्दूक मारने लगे तो क्या कहेंगे उसको? ऐसा ही हाल हमारा हो गया। अतः शत्रुता का भाव, वैर का भाव, घृणा का भाव, द्वेष का भाव, ईर्ष्या का भाव, किसी के प्रति कटुता का भाव सबसे बड़ा खराब भाव है। आप कितनी भी कोशिश कर लीजिये, एक हफ्ता लगातार योग में बैठे रहिये लेकिन आप योग में टिक नहीं सकते। मन सिंहासन है, इस सिंहासन पर एक ही राजा बैठ सकता है। एक नगरी का एक राजा होता है। इस मन रुपी सिंहासन पर शिव बाबा को बिठा दीजिये या शत्रु को बिठा दीजिये। किसी व्यक्ति के प्रति शत्रु का भाव रखेंगे, घृणा-द्वेष का भाव करेंगे तो शिव बाबा वहाँ से चले जायेंगे। अगर आपने शिव बाबा को बिठाया तो शत्रु भाव आ नहीं सकता। क्योंकि बाबा ने कहा हुआ है, बाबा-बाबा कहोगे तो माया भाग जायेगी। अगर मन रुपी सिंहासन पर बाबा को बिठायेंगे तो शत्रु के लिए जगह ही नहीं रहेगी। अब आप ही सोच लीजिये कि दोनों में से आप किस को पसन्द करते हैं।

योगी व्यक्ति परमात्मा से योग लगाना चाहता है क्योंकि उसके मन का मीत वही है। उसकी बजाय यदि वह यह समझता है कि फलाने ने मुझे तंग किया है, फलाने ने मुझे परेशान किया है, फलाना व्यक्ति खराब है तो वह अपना ही अकल्याण कर लेता है। कहा गया है कि आत्मा अपना ही मित्र, अपना ही शत्रु है। हम स्वयं ही अपने से शत्रुता कर रहे हैं, और कोई नहीं कर रहा है। इसलिए सबसे पहली जो बात है हमारे योगी जीवन की, वो है सब के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना। इसको हम साधारण बात समझते हैं। शुभ-भावना माना सबका भला हो। सबका भला हो, जब तक हमारे मन में यह भाव नहीं है, हम योगी ही नहीं हैं। इसलिए गीत में कहा गया है, योगी वही है जिसका कोई शत्रु नहीं है। यह हमें बिल्कुल पूरी रीति से पता होना चाहिए।

कोहिमा-नागालैंड। होली के अवसर पर नागालैंड के राज्यपाल प्रो. जगदीश मुखी एवं उनकी धर्मपत्नी से मुलाकात कर ब्र.कु. रूपा बहन,संचालिका,कोहिमा तथा नागालैंड के अन्य क्षेत्र ने उन्हें शॉल पहनाने एवं ज्ञान चर्चा के पश्चात् होली का तिलक लगाया और प्रसाद देने के साथ ही राजयोग मेडिटेशन कोर्स करने के लिए स्थानीय सेवाकेन्द्र एवं माउण्ट आबू आने का निमंत्रण दिया।

मुम्बई-गोराई। अथर्व फाऊंडेशन के अध्यक्ष व बोरिवली भाजपा के विधायक सुनील राणे तथा उपाध्यक्ष श्रीमति वर्षा राणे द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर प्रबोधनकार ठाकरे नाट्य मंदिर,बोरिवली वेस्ट में आयोजित 'वुमेन अचीवर अवॉर्ड्स 2022' में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पारुल बहन को आध्यात्मिकता के द्वारा समाज में शांति एवं सद्भावना स्थापित करने के क्षेत्र में योगदान के लिए 'नारी शक्ति पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए सुप्रसिद्ध अभिनेत्री निहारिका रायजादा तथा ब्राइट आउटडोर मीडिया के चेयरमैन योगेश लखानी। इस मौके पर अभिनेत्री अमृता खानविलकर, महक चहल, चांदनी शर्मा, समायरा संधू, स्नेहा गुप्ता व जसलीन कौर, नॉर्थ मुम्बई से सांसद गोपाल शेट्टी सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

चिलोडा-गांधीनगर(गुज.)। एयर फोर्स ब्रिगेडियर मुथु कुमार, एसएम.पीएच.डी., सीई,एएफ, गांधीनगर को ओआरसी,गुरुग्राम में आयोजित होने वाले सिक्योरिटी सर्विस विंग के कार्यक्रम के लिए निमंत्रण देते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. तारा दीदी। साथ हैं कर्नल बी.के. गणेश तथा ब्र.कु. श्रुति बहन।

मौदा-महा.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' थीम के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'महिलाएं : नए भारत की ध्वजवाहक' कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अर्चना बहन, सॉफ्ट स्किल ट्रेनर कोमल हटवार, डॉ. वैभव जैसवाल, डॉ. नीलिमा घाटाले आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में डॉ. श्रुति खनते, डॉ. नगराले, ज्योति ढोमने, तृप्ति निम्जे, ब्र.कु. विमल बहन, ब्र.कु. अर्चना मेहर सहित अन्य गणमान्य लोग शामिल रहे।

मुम्बई-मीरा रोड। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चैतन्य झाँकी से युक्त 'सुरक्षित भारत-सड़क सुरक्षा मोटर साइकिल यात्रा' के शुभारंभ कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए भाजपा जिला अध्यक्ष रवि व्यास। साथ हैं बोरीवली ज़ोन संचालिका ब्र.कु. दिव्या बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रंजन बहन तथा अन्य गणमान्य लोग।

खजुराहो-म.प्र.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' थीम के अंतर्गत 'मेरी संस्कृति मेरी पहचान' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या बहन, क्षत्राणी संगठन अध्यक्ष किरण चंदेल, महिला मोर्चा अध्यक्ष कल्पना सिंह चौहान, करणी सेना उपाध्यक्ष नविता सिंह, कवियत्री ममता सिंह बुंदेला, एडवोकेट मीनाक्षी सिंह, स्कूल डायरेक्टर वीणा जैन, ब्लॉक अध्यक्ष रश्मि परमार, बीजेपी नेता अंजली पांडे, वंदना सिंह एवं रश्मि बघेल, सूर्या होटल से शिल्पी जैन, रचना पटैरिया सहित समाज की प्रतिष्ठित महिलाएं मौजूद रहीं। इस मौके पर आयोजित पारंपरिक वेशभूषा प्रतियोगिता के तहत महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों की पारंपरिक पोशाक पहनकर आईं। ब्र.कु. नीरजा बहन, ब्र.कु. पिंकी बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'महिलाएं : नए भारत की ध्वजवाहक' परिचर्चा का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए कांग्रेस नेत्री व वकील अदिति दवेसर, तहसीलदार रूपाली जैन, जागृत नारी समिति की अध्यक्ष सीमा टाक, पतंजलि योग शिक्षिका आशा दुबे, नवकार महिला मंडल की संस्थापक अल्का कटारिया, नवकार महिला मंडल की अध्यक्ष उषा भंडारी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता बहन, वेस्टर्न रेलवे इम्प्लॉएज़ यूनियन रतलाम की सचिव व हिन्दुस्तान सभा मध्य प्रदेश की सेक्रेट्री रंजीता वैष्णव, इंजीनियर खुशबू राजावत तथा अन्य।

नवसारी-जलालपुर रोड(गुज.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में संगीता बहन,ट्रस्टी,श्री ममता मंदिर स्कूल, ब्र.कु. भानू बहन तथा अन्य।

राजनांदगांव-छ.ग.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' परियोजना के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'श्रेष्ठ भारत के लिए सशक्त नारी' विषय पर ब्रह्माकुमारीज़ के 'वरदान भवन' लालबाग में आयोजित कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमति गीता घासी साहू, राजनांदगांव एवं कबीरधाम स्थित सेवाकेन्द्रों की संचालिका ब्र.कु. पुष्पा बहन, एडिशनल एस.पी. श्रीमति सुरेशा चौबे, समाजसेवी श्रीमति शारदा तिवारी, गुजराती महिला मंडल की अध्यक्ष निशा ठक्कर, ब्र.कु. प्रभा बहन, कस्तुरबा महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष सरस्वती देवी लोहिया, अग्रवाल महिला मंडल की अध्यक्ष शशि खोखरिया, माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्ष शीला गांधी सहित अनेक प्रतिष्ठित महिलायें एवं अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

महासमुंद-छ.ग.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' थीम के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राष्ट्रीय महिला आयोग सदस्य अनिता रावटे, डिप्टी कलेक्टर सृष्टि चंद्राकर, नगर पालिका अध्यक्ष प्रकाश चंद्राकर, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रीति बहन तथा अन्य।

सांगानेर-राज.। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पूजा बहन को गेस्ट ऑफ ऑनर देते हुए स्नेह पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल डॉ. अनुपमा माहेश्वरी।

कर्म का आचरण किया जाना ही है.... यथार्थ रूप में कर्मयोग

भगवान ने एक बहुत सुन्दर बात कही कि कर्मयोग ये मानव का सनातन कर्त्तव्य है और इतनी सुंदर बात कहते हुए भगवान कहते हैं यज्ञ की प्रक्रिया ही कर्म है, जिससे यज्ञ पूर्ण हो। इसके अतिरिक्त जो कुछ भी मनुष्य करता है बंधन है। यज्ञ पूर्ति के लिए संगदोष से अलग रहकर कर्मों का आचरण करना है। जब यह बात सुनते हैं तो लोग सोचते हैं कि क्या रोज़ हवन करना होगा! दूसरी सोचने की बात तो यह है कि अगर युद्ध का मैदान हो तो अब युद्ध के मैदान में भगवान यज्ञ करने के लिए प्रेरणा क्यों देंगे? युद्ध करना है, प्रैक्टिकल बनने की बात है। तो वहाँ यज्ञ करने की बात क्यों आ जाती है? यज्ञ का मतलब यहाँ कुछ और है।

यज्ञ जब भी व्यक्ति करता है तो किसलिए करता है? हमेशा देखा जाता है कि जब भी संसार में, घरों में यज्ञ होता है तो शुद्धिकरण की प्रक्रिया के लिए ही यज्ञ किया जाता है। जैसे किसी ने नया मकान लिया,घर लिया तो घर में जाने से पूर्व यज्ञ करते हैं। क्योंकि घर के वातावरण का शुद्धिकरण होता है। घर का शुद्धिकरण करने के बावजूद भी देखा जाता है दूसरे दिन से ही कलह-क्लेश कभी-कभी आरम्भ हो जाता है। तो क्यों? वातावरण का शुद्धिकरण नहीं हुआ? ऐसा नहीं है लेकिन यहाँ जिस यज्ञ की बात की गई है वो है जीवन रूपी यज्ञ।

जैसे यज्ञ के अन्दर तीन चीज़ों को स्वाहा करना होता है - 1. जौं- जौं लम्बे होते हैं ये प्रतीक है हमारे तन का 2. तिल- सूक्ष्म होता है ये प्रतीक है हमारे मन का 3. घी- लिक्विड होता है ये प्रतीक है धन का। परंतु फिर भी प्रैक्टिकल में देखा जाता है कि जिस आस्था, विश्वास और मनोकामना के साथ यज्ञ हवन किया गया, कुछ समय बाद पुनः वो समस्याएं, परिस्थितियां खड़ी हो जाती हैं क्यों?

वास्तव में उसका सूक्ष्म भावार्थ है कि जीवन के अन्दर परिस्थितियां, समस्याएं कलह-क्लेश क्यों आता है? तो तन जो प्रतीक है जिस प्रतीक के लिए ही हम जौ को स्वाहा करते हैं यानी तन के द्वारा किए गए बुरे कर्म, बुरे संस्कार उसको स्वाहा करो। जब इन बुराइयों को स्वाहा करते हैं तब हमारे तन का शुद्धिकरण होता है। दूसरा मन के अन्दर जो

ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

बुरे विचार हैं उनको स्वाहा करो, तो मन का शुद्धिकरण होता है। और धन जो बुरे रास्तों पर, बुरी आदतों के पीछे जा रहा है वहीं घर के अंदर अशांति को ले आता है। तो बुरी आदतों को स्वाहा करो। जिससे धन का शुद्धिकरण होने लगता है। तन, मन और धन जो बुराई के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है। उन बुराइयों को स्वाहा करो और जब इन तीनों का शुद्धिकरण होता है माना जीवन का शुद्धिकरण हुआ। इसीलिए भगवान ने कहा कि यज्ञ की प्रक्रिया ही कर्म है। भावार्थ- यह जीवन रूपी यज्ञ के शुद्धिकरण की प्रक्रिया में जो कर्म हम कर रहे हैं वो यथार्थ कर्म हैं। जिससे जीवन रूपी यज्ञ सम्पूर्ण होता है। इसके अतिरिक्त मनुष्य जो कुछ भी करते है वो बंधन में बांधने जैसा हो जाता है। और विशेष एक सावधानी देते हैं कि यज्ञ पूर्ति के लिए संगदोष से अलग रहकर कर्मों का आचरण करो।

बार-बार गीता में यह बात आयी है "संगदोष - संग एक दोष है"। अक्सर हम यही समझते रहे कि मनुष्य का संग यानी बुरे लोगों के साथ हम संग ना करें, किनारा कर लें। कई लोग किनारा भी कर लेते हैं। परंतु आज मनुष्य का संगी-साथी कोई है तो वो है टेक्नोलॉजी। मोबाइल सबसे बड़ा संग है और उस संग के प्रभाव में जब आ जाता है, उसकी अधीनता में जब आ जाता है तो कभी-कभी व्यक्ति को यह भी समझ में नहीं आता है कि उस मोबाइल के माध्यम से जब वो सारी दुनिया से जुड़ जाता है तो कहाँ-कहाँ भटक जाता है। कौन-सी कौन-सी राहों में भटक जाता है कि जीवन का अशुद्धिकरण हो जाता है। पहले जब माँ-बाप देखते थे कि बच्चा इस व्यक्ति के संग में आ रहा है तो बच्चे को रोकने का प्रयास करते थे। बेटा ये संग ठीक नहीं है। लेकिन आज कल मोबाइल के अंदर वो बच्चा कहाँ-कहाँ घूम रहा है ये पता भी नहीं चलता और जब पता ही नहीं चलता है तो कितनी प्रकार की अशुद्धियां आ जाती हैं जीवन में। इसलिए भगवान कहते हैं जीवन पूर्ति के लिए संगदोष से अलग रह कर के कर्म का आचरण करना है।

भगवान कहते हैं प्रजापिता ब्रह्मा ने कल्प के आदि में यज्ञ सहित प्रजा को रचकर कहा कि इस यज्ञ के द्वारा तुम वृद्धि को प्राप्त करो। ये यज्ञ जिसमें तुम्हारा अनिष्ट ना हो, विनाश रहित इष्ट संबंधी कामना की पूर्ति करेगा। इस यज्ञ के द्वारा देवताओं की उन्नति करो अर्थात् देवी संस्कारों की उन्नति करो।

- शेष पेज 7 पर ...

सोलन-हि.प्र.। शिव ध्वजारोहण कार्यक्रम के पश्चात् स्वास्थ्य व परिवार कल्याण राज्यमंत्री राजीव सहजल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुषमा बहन।

सिवनी-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के तत्वाधान में डूंडा सिवनी में आयोजित श्री राम कथा के समापन एवं महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. ज्योति दीदी के महिला प्रभाग की ज़ोनल कोऑर्डिनेटर बनने पर शहर के प्राचीन हनुमान घाट समिति के प्रमुख लक्ष्मी कश्यप, संजय शर्मा, महिला सशक्तिकरण जन समस्या निवारण संस्थान की प्रमुख पार्वती डेहरिया, सृजन बहुउद्देशीय सामाजिक संस्थान की प्रमुख सुषमा राय, गूंज संस्थान की प्रमुख मनीषा चौहान, मां अंजना ग्रुप की अध्यक्ष शोभा जैसवाल, जैविक व यौगिक खेती के युवा प्रेरक अंकित मालू, समाजसेवी बंटी भाई आदि अनेक समाजसेवी एवं अनेक संगठनों से जुड़े भाई-बहनों द्वारा ब्र.कु. ज्योति दीदी का भव्य सम्मान किया गया।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये, कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NO: - 30826907041
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH:- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya,Shantivan
Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail -omshantimedia.acct@bkivv.org **OR**
Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087

ALL-IN-ONE QR
Paytm Accepted Here
Wallet KYC NOT Required
Scan & Pay using Paytm App
Wallet or Bank A/c | Any Debit or Credit Card | Paytm Postpaid
BHIM UPI

कोटा-राज.। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत बाइक रैली के उद्घाटन सत्र में दीप प्रज्वलित करते हुए मंजू मेहरा,महापौर, राजेंद्र काव्य,ट्रैफिक पुलिस इंचार्ज, गंगा सहाय शर्मा,पुलिस कुन्हाड़ी सीआई ऑफिसर, धर्मपाल जी,पुलिस इंचार्ज कुन्हाड़ी कोटा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उर्मिला बहन तथा वरिष्ठ ब्र.कु. बहनें।

कोरबा-छ.ग.। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'सुरक्षित भारत-सड़क सुरक्षा मोटर साइकिल यात्रा' अभियान के विभिन्न क्षेत्रों से होते हुए जमनीपाली पहुंचने पर आयोजित परिचर्चा में कुमार पुरुषोत्तम,डिप्टी कमाण्डेंट,सी.आई.एस.एफ. दर्री कोरबा, ब्र.कु. रूकमणी दीदी, ब्र.कु. श्याम,मा.आबू, इन्द्रनाथ नायक,उपनिरीक्षक,थाना दर्री, बुधवार साय,पार्षद,न.प.नि., नरेश जायसवाल,प्रांत प्रमुख,विद्या भारती छ.ग. प्रांत, अर्जन सिंह पटेल,जिला प्रतिनिधि,सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग. कोरबा आदि उपस्थित रहे।

विदिशा-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में डी.एस.पी. आकांक्षा जैन, डॉ. प्रतिभा ओसवाल,स्त्री रोग विशेषज्ञ,जिला अस्पताल, डॉ. निर्मला तिवारी,स्त्री रोग विशेषज्ञ,जिला अस्पताल, कंचन शर्मा,समाज सेविका, आकृति बंसल,समाज सेविका, मंजू राजपूत,करणी सेना अध्यक्ष, ब्र.कु. रेखा बहन,सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. रुकमणी बहन आदि उपस्थित रहे।

बरेली-सिविल लाइंस(उ.प्र.)। महाशिवरात्रि महोत्सव पर सभासद् राजेश अग्रवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नीता बहन।

बर्रा-कानपुर(उ.प्र.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' थीम के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ एवं भारत सरकार के सांस्कृतिक मंत्रालय के संयुक्त तत्वाधान में श्री रामदेवी रामदयाल त्रिपाठी महिला पॉलिटेक्निक,साकेत नगर कानपुर में आयोजित 'महिलाएं : नए भारत की ध्वजवाहक' कार्यक्रम में प्रिन्सीपल संजय अस्थाना, हेड फैकल्टी श्रीमति रजनी, तेरह शिक्षक तथा पैंतालीस ट्रेनर्स सहित ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

खरगोन-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए बायें से श्रीमति रेखा शर्मा,लेक्चरर, ब्र.कु. किरण बहन, डॉ. शालिनी रतोरिया,डायरेक्टर,देवी रुक्मणी स्कूल, डॉ. विराज भालके,गायनेकोलॉजिस्ट, डॉ. अनीता शुक्ला,साइंटिस्ट तथा श्रीमति नीमा,समाजसेवी।

वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका राजयोगिनी गीता दीदी,माउण्ट आबू

कितने न भाग्यशाली हम...

जो परमात्म श्रेष्ठ मत को समझ पाये...!

गतांक से आगे...

क्यों बाबा कहते हैं पढ़ाई एक जैसी पढ़ाई जाती है चाहे नये हों या पुराने, छोटे हों या बड़े, पहले आये या अभी आये सबके आगे पढ़ाई वही है जो बाबा ने ब्रह्मा तन में प्रवेश कर शुरु से पढ़ाई। वो ही आज भी हम पढ़ रहे। लेकिन प्रैक्टिकल फॉलो करने में हम नम्बरवार हैं इसलिए प्राप्ति, अनुभव नम्बरवार हो रहे। तो ये बहुत स्पष्ट है मुरली के द्वारा भगवान की श्रीमत क्या है। साकार में जो मुरलियां चलीं बाबा ने इस लौकिक जीवन की, माना इस स्थूल जीवन की माना इस लोक में जो जीवन जीते हैं हम, उस दैनिक जीवन की छोटी-मोटी हर बात हमें उसने समझाई है और जो अव्यक्त मुरलियां हैं वो उसके आगे की स्टेज की हैं। अगर इस मनुष्य लोक में जो मानव जीवन हम जीते हैं वो अगर हम साकार मुरली के अनुरुप जीते हैं तो हम अव्यक्त फरिश्ता, सूक्ष्म सम्पूर्ण जीवन में प्रवेश कर सकते हैं और उस सूक्ष्म सम्पूर्ण अव्यक्त जीवन के लिए, सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए जो गाइडेंस मिलती हैं वो हमें अव्यक्त मुरलियों से प्राप्त होती है तो दोनों ही महत्वपूर्ण हैं हमारे जीवन में।

साकार मुरली का भी इतना प्यार से अध्ययन हो क्योंकि उसमें उठने-बैठने, चलने-बोलने, पहनने की, देखने की माना इस स्थूल जीवन की हर छोटी-मोटी बातें हमें समझाई जाती हैं। भल साकार में बाबा से हम नहीं मिले हैं बाद में आये हैं लेकिन मुरली के द्वारा स्पष्ट है कि साकार के द्वारा भगवान ने हमें क्या सिखाया, क्या पढ़ाया इसलिए मुरली की पढ़ाई काम चलाऊ नहीं होनी चाहिए,बहुत ही आत्मभिमानी स्थिति में स्थित होकर और बाबा से बुद्धियोग लगाकर पूरी तन्मयता से हमें मुरली का पाठ पढ़ना चाहिए। तो मैं समझती हूँ कि हमें कोई मूंझ नहीं होगी, कोई प्रश्न नहीं होगा, कोई उलझन नहीं होगी। बाबा ने स्वयं ही सबकुछ स्टेप बाय स्टेप मुरली में हमें समझाया इसलिए बाबा कहते भी हैं बच्चों को पूछने की भी दरकार नहीं है बाबा खुद ही कल्प पहले मुआफिक स्वयं ही सब कुछ समझाते जाते हैं और वो भी एक बार नहीं अनेक बार नये-नये ढंग से।

> **बाबा ने स्वयं ही सबकुछ स्टेप बाय स्टेप मुरली में हमें समझाया इसलिए बाबा कहते भी हैं बच्चों को पूछने की भी दरकार नहीं है बाबा खुद ही कल्प पहले मुआफिक स्वयं ही सबकुछ समझाते जाते हैं और वो भी एक बार नहीं अनेक बार नये-नये ढंग से।**

वही मूल सत्य बातें बार-बार बाबा हमें समझाते हैं अगर ये मुरली का अध्ययन हमें स्पष्ट है तो दूसरा स्टेप जो हमें मत आपस में भाई-बहनों से मिलती है क्योंकि कईयों को ये प्रश्न होता है कि बाबा तो है नहीं तो अब जो भी निमित्त भाई-बहनें हैं या हम ब्राह्मण आपस में भाई-बहनें एक दो को जो राय देते हैं, जो मार्गदर्शन देते हैं, मत देते हैं वो श्रीमत के अनुरूप है या नहीं वो हम कैसे समझें? क्योंकि कईयों के ये प्रश्न होते हैं कि हमें निमित्त बहन ने कहा परन्तु वो उनकी मत है या बाबा की? या कोई पुराने भाई-बहनों ने हमें मार्गदर्शन दिया वो श्रीमत है या मनमत? अगर मुरली आपकी बुद्धि में स्पष्ट है तो आप परख सकेंगे कि चाहे कोई निमित्त भाई-बहन हमें मत देते हैं या कोई क्लास में आने वाले पुराने भाई-बहनें मत देते है या ईश्वरीय परिवार का छोटा या बड़ा कोई भी हमें मार्गदर्शन देता है तो आप उसे मुरली के द्वारा वैरीफाय कर सकते हैं, मुरली के द्वारा परख सकते हैं कि जिस भी आत्मा ने हमें ईश्वरीय परिवार की समर्पित या घर में रहने वाली ने हमें मत दी है अगर वो श्रीमत, मुरली के अनुरुप है तो उसे स्वीकार करने में हमें मूंझ नहीं होनी चाहिए। उसे हमें प्यार से स्वीकार करनी चाहिए और उसे अपने जीवन में धारण करनी चाहिए।

- क्रमशः

इंदौर-म.प्र.। साधना न्यूज़ चैनल मध्य प्रदेश के द्वारा ब्र.कु. आयुषी बहन को 'वुमेन अचीवर्स अवॉर्ड 2022' से सम्मानित करते हुए सांसद शंकर लालवानी, इंदौर विकास प्राधिकरण के चेयरमैन जयपाल सिंह चावड़ा तथा सेंट्रल प्रेस क्लब ऑफ इंडिया के चेयरमैन विजय कुमार दास।

दिल्ली-सरिता विहार। ब्रह्माकुमारीज़ के कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा सरिता विहार के लोटस यूएस कॉम्प्लेक्स में 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के उद्घाटन कार्यक्रम में मशहूर पंजाबी-बॉलीवुड गायक एवं संगीतकार शंकर साहनी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी,दिल्ली पाण्डव भवन, ब्र.कु. कृष्णा दीदी,शालीमार बाग एवं ब्र.कु. पूनम दीदी,दिल्ली ज़ोन संयोजक,कला एवं संस्कृति प्रभाग। इस मौके पर ब्र.कु. सतीश भाई व ब्र.कु. नितिन भाई,माउण्ट आबू, सुमित कनोडिया, डी.आई.डी. में अपने नृत्य का कौशल दिखा चुके एवं भारत सरकार द्वारा सम्मानित कृष्णा कोहली व उनके भाई प्रिंस कोहली, मशहूर गायक तालिब मोहम्मद, यू ट्यूबर मयंक मिश्रा सहित अन्य गणमान्य लोग एवं कला के क्षेत्र से जुड़े लोग उपस्थित रहे।

पंथाघाटी-शिमला(हि.प्र.)। राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दादी को श्रद्धा सुमन अर्पित करने के पश्चात् जिला शिमला पुलिस अधीक्षक डॉ. मोनिका भुटुगुरु को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए शिमला सेवाकेन्द्र की मुख्य संचालिका ब्र.कु. रजनी बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. अनीता बहन तथा अन्य।

जयपुर-बनीपार्क(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव के तहत आयोजित 'महिलाएं : नए भारत की ध्वजवाहक' विषयक कार्यक्रम में बीजेपी महिला मोर्चा कोषाध्यक्ष ज्योति तोतला, राज्य उपभोक्ता आयोग की जज उर्मिला वर्मा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी, ब्र.कु. दीप्ति बहन, समाज की विभिन्न अग्रणी महिलाओं से लेकर गृहणियों तथा दो सौ से अधिक माताओं-बहनों ने भाग लिया।

चंद्रपुर-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ चंद्रपुर,गडचिरोली,वणी क्षेत्र की पूर्व मुख्य संचालिका एवं ब्रह्माकुमारीज़ आर्ट एंड कल्चर विंग की पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्षा ब्र.कु. कुसुम दीदी के श्रद्धांजलि कार्यक्रम में विधायक किशोर जोरगेवार, डॉ. रजनी हजारे, डॉ. माधुरी मानवटकर, ब्र.कु. जयगोपाल लुथरा, ब्र.कु. दयाल भाई,मा.आबू, ब्र.कु. कुंदा दीदी,संचालिका,चंद्रपुर, ब्र.कु. नलिनी दीदी,गडचिरोली, ब्र.कु. पूनम बहन,दिल्ली, ब्र.कु. सीता बहन,अमरावती, ब्र.कु. नरेन्द्र भाई, ब्र.कु. भावना बहन,दिल्ली हस्तसाल आदि ने कुसुम दीदी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

बरनाला-पंजाब। वर्ल्ड हैप्पीनेस डे के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित कार्यक्रम एवं रैली में उपस्थित रहे सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बृज बहन, ब्र.कु. पुष्प, ब्र.कु. सुदर्शन, ब्र.कु. सोमा, डॉ. त्रिलोकी, डॉ. आशा, डॉ. मोहित, डॉ. दीप्ति तथा अन्य भाई-बहनें।

बेंगलुरु-वी.वी.पुरम(कर्नाटक)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में श्रीमति हज़रा शेख,प्रिंसिपल,केन्द्रीय विद्यालय,एएससी सेंटर,बेंगलुरु, डॉ. मधु सिंघल,फाउण्डर एंड मैनेजिंग ट्रस्टी,मित्रा ज्योति, डॉ. ए. वनजा,प्रिंसिपल साइंटिस्ट इन सेंटर फॉर सोसाइटल मिशन्स एंड स्पेशल टेक्नोलॉजीज़,नेशनल एयरोस्पेस लेबोरेट्रीज़,बेंगलुरु, डॉ. नागश्री एस.आर., प्रोफेसर,वोक्कालिगार संघ डेंटल कॉलेज, ब्र.कु. अम्बिका दीदी,उपक्षेत्रीय निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़,वीवी पुरम तथा ऑनलाइन राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी शामिल रहे।

ब्यावरा-राजगढ़(म.प्र.)। विश्व जल दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पीएचई के एक्ज़ीक्युटिव इंजीनियर गोविंग भूरिया, पीएचई के इंजीनियर प्रताप सिंह सिसोदिया, आईटीआई के ट्रेनिंग ऑफिसर कपिल गुप्ता, राजगढ़ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मधु बहन एवं ब्र.कु. सुरेखा बहन।

बापौली-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर सेवाकेन्द्र में आयोजित 'ब्लड डोनेशन कैम्प' में 52 भाई-बहनों ने ब्लड डोनेट किया। कार्यक्रम में दादी हृदयमोहिनी, दादी जानकी तथा दादी चन्द्रमणि को श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया। तत्पश्चात् डिवाइन चैरिटेबल ट्रस्ट दिल्ली की ओर से सेवाकेन्द्र को सर्टिफिकेट प्रदान करते हुए डॉ. सतेंदर व डॉ. सन्नी। सर्टिफिकेट प्राप्त करते हुए ब्र.कु. ललिता बहन, ब्र.कु. मोनिका बहन व ब्र.कु. दिव्या बहन।

जयपुर-राज.। महिला गांधीनगर थाना एसएचओ श्रीमति एकता को कार्यक्रम के दौरान ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए मालपुरा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जीत बहन।

रतलाम-म.प्र.। कीर्ति जलधारी,सहायक कोषालय अधिकारी, कल्पना पुरोहित,जन शिक्षण संस्थान डायरेक्टर, श्वेता सोनगरा,दंत रोग विशेषज्ञ, बी.के. धर्मा कोठारी आदि अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मनोरमा बहन।

मुम्बई-घाटकोपर। राजयोगिनी ब्र.कु. नलिनी दीदी ने राज भवन में राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी से सदिच्छा मुलाकात की एवं अपने हस्तों से बनाया हुआ श्री लक्ष्मी नारायण का चित्र राज्यपाल को भेंट किया। तत्पश्चात् राज्यपाल ने दीदी को मध्य अमेरिका के विश्वविद्यालय द्वारा 'डॉक्टर ऑफ लेटर्स' की उपाधि मिलने की बधाई एवं शुभकामनायें दीं। इस अवसर पर महाराष्ट्र सरकार के पूर्व कैबिनेट मंत्री प्रकाश मेहता भी उपस्थित रहे।

शांतिवन-आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी को फॉर्च्यून इंडिया एक्सचेंज का 'टाइटन्स ऑफ इंडियन बिज़नेस' विशेष अंक भेंट करते हुए भारतीय नौसेना के उप प्रमुख वाइस एडमिरल एस.एन. घोरमडे एवं डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके।

अम्बिकापुर-छ.ग.। रायपुर के कांग्रेस भवन में माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, गृह राज्यमंत्री ताम्रध्वज साहू, मत्स्य,पशुपालन एवं संसदीय कार्य राज्यमंत्री रवीन्द्र चौबे व खाद्य एवं संस्कृति विभाग राज्यमंत्री अमरजीत भगत को ईश्वरीय सौगात एवं प्रसाद भेंट करने के पश्चात् माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देते हुए सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी एवं ब्र.कु. अहिल्या बहन।

स्वास्थ्य

नींबू है बड़े कमाल की चीज़...

नींबू से सब परिचित हैं। लोग नींबू का इस्तेमाल कर कई व्यंजन बनाते हैं। नींबू की चटनी को बहुत ही पसंद से खाई जाती है। नींबू की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जहाँ दूसरे फल पकने पर मीठे हो जाते हैं, वहीं नींबू का स्वाद हर समय खट्टा ही रहता है। नींबू विटामिन सी का मुख्य स्रोत है। नींबू के सेवन से स्कर्वी रोग भी ठीक होता है। इतना ही नहीं नींबू का प्रयोग कर कई और भी बीमारी ठीक की जा सकती हैं। आयुर्वेद में नींबू के बारे में बहुत सारी अच्छी बातें बताई गई हैं। तो अब हम बात करेंगे इससे होने फायदों के बारे में....

रक्तस्राव होने पर
एक कप पीने लायक गर्म दूध में आधा नींबू निचोड़ कर दूध फटने से तुरन्त पहले पी जायें। यह रक्तस्राव को तुरन्त बंद कर देता है। इस प्रयोग को एक या दो से अधिक न करें।

अधिक प्यास लगने पर
अधिक प्यास लगने की परेशानी में नींबू का शर्बत बनाकर पींए। इससे अधिक प्यास लगने की समस्या ठीक हो जाती है। और 5 मिली फल के रस में मधु, नारिकेलोदक और नमक मिलाकर सेवन करें। इससे अधिक प्यास लगने की परेशानी ठीक होती है।

छालों की परेशानी में
जीभ पर हुए छालों और मसूड़ों पर नींबू का छिलका रगड़ें। इससे जीभ के छालों और मसूड़ों की परेशानी में लाभ होता है।

मुहांसे और चेहरे की झुर्रियों में
नींबू के रस में शहद मिलाकर चेहरे पर लगाएं। इससे चेहरे के कील मुहांसे और झुर्रियां ठीक हो जाती हैं।

नींबू द्वारा चर्म का इलाज
दाद, खाज, चमड़ी पर काले दाग आदि रोगों पर नींबू को काटकर रगड़ने से लाभ होता है।

नींबू फल के रस को एक गिलास उबले दूध में डालें। इसमें ग्लिसरीन मिलाकर आधे घंटे तक रख दें। उसे शरीर पर लगाने से रूखी त्वचा सहित अन्य त्वचा की बीमारी में फायदा होता है।

आँखों के दर्द में
नींबू के रस को लोहे की खरल(कुंडी) में, लोहे के दस्ते से घोटें। जब रस काला पड़ जाये, तब आँखों के आस-पास पतला-पतला लेप करें। इससे आँखों का दर्द ठीक हो जाता है।

टायफाइड में लाभ
नींबू के दो भाग कर लें। एक भाग में पिसी हुई काली मिर्च और सेंधा नमक भरें। दूसरे भाग में मिश्री भरें। दोनों को गर्म कर चूसें। इससे वर्षा-ऋतु के बाद होने वाला टायफाइड ठीक होता है।

भूख बढ़ाने के लिए
नींबू को काटकर काला नमक बुरक लें। इसे चाटने से भी भूख न लगने की समस्या ठीक हो जाती है।

एक नींबू के रस में थोड़ी अदरक एवं थोड़ा काला नमक मिलाकर सेवन करने से भूख बढ़ती है।

पेट दर्द में नींबू से लाभ
1-2 ग्राम कच्चे नींबू के छिलके को पीसकर खाने से पेट के दर्द से राहत मिलती है।

दस्त पर रोक
30 मिली कागजी नींबू के रस को दिन में 2-3 बार सेवन करने से दस्त पर रोक लगती है।

मूत्र रोग में लाभदायक
नींबू के रस में खीरे का रस या नारिकेलोदक या फिर गाजर का रस मिलाएं। इसका सेवन करने से कम पेशाब आने की समस्या ठीक हो जाती है। इसके साथ ही इससे किडनी विकार और सूजन ठीक हो जाती है।

किडनी स्टोन से राहत पाने में
नींबू किडनी स्टोन को बनाने से रोकता है, क्योंकि एक रिसर्च के अनुसार नींबू एक्सट्रेक्ट कैल्शियम ऑक्सलेट के कणों को किडनी में जमा नहीं होने देता।

नींबू से जोड़ों के दर्द का उपचार
1-2 मिली नींबू के रस को 4-4 घंटे के अंतर पर सेवन करने से जोड़ों के दर्द में लाभ होता है।

एक नींबू के रस में थोड़ी अदरक एवं थोड़ा काला नमक मिलाकर सेवन करने से गठिया या जोड़ों के दर्द में फायदा होता है।

निम्बाहेड़ा-राज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आचार्य तुलसी ब्लड फाउंडेशन द्वारा आयोजित ब्लड डोनेशन कैम्प में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शिवली बहन, ब्र.कु. मधु बहन सहित कई ब्र.कु. भाई-बहनों द्वारा रक्तदान किया गया। इस मौके पर समूह चित्र में उनके साथ महिला जिला अध्यक्ष वर्षा कृपलानी, एटीबीपी संस्थापक सुनील ढ़ीलिवाल तथा अन्य।

अलीराजपुर-म.प्र.। वर्ल्ड हैप्पीनेस डे के अवसर पर 'गीता ज्ञान के द्वारा खुशनुमा भारत' विषय पर सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए महाराज घनश्याम दास जी, संत संतोष वर्मा,गायत्री परिवार, जितेंद्र जी,प्रोफेसर, ब्र.कु. नारायण भाई, ब्र.कु. माधुरी बहन तथा अन्य।

बेंगलुरु-गोट्टीगेरे(कर्नाटक)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'महिलाएं : नए भारत की ध्वजवाहक' कार्यक्रम में श्रीमति महेश्वरी,फैसिलिटेटर,ग्राफो-एनालिटिकल थैरेपिस्ट,सीईओ ऑफ यूनिक ट्रुथ ऑर्गनाइज़ेशन, डॉ. शोभा,फैमिली फिज़ीशियन,कंसल्टेंट डायबिटोलॉजिस्ट,माइक्रोबायोलॉजिस्ट, डॉ. प्रेम प्रकाश,विवेकानंद हॉस्पिटल,बेंगलुरु, श्रीमति अनीता शर्ली,प्रेसिडेंट,स्टेट पार्लर एसोसिएशन, ब्र.कु. अम्बिका दीदी,उपक्षेत्रीय निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़,वीवी पुरम सहित समाज के विभिन्न वर्ग के दो सौ से अधिक लोग उपस्थित रहे। इस मौके पर फ्रंट लाइन वॉरियर्स, बीबीएमपी वर्कर्स को महामारी के समय उनके द्वारा दी गई अमूल्य सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

जबलपुर-शक्तिनगर(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ के शिव शक्ति भवन में आयोजित 'विश्व शांति हेतु महिला सशक्तिकरण' कार्यक्रम के दौरान शहर की महिलाओं के साथ ब्र.कु. कविता तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

व्यर्थ की सोच को करें खत्म...

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

एक मिनट साइलेंस में बैठें और अपने मन से पूछें आज से कौन-सी बात करनी है। और मन तुरंत रिप्लाई करेगा कि आज से ये बात करनी है। गुण देखना हमें पता है, निंदा नहीं करना, खुश रहना, दु:खी नहीं होना, नाराज़ नहीं होना, सबको एक्सेप्ट करना हमें पता है। इम्प्लीमेंट भी करना है। इतनी सारी बातें जो निकली हैं ना इनमें से सिर्फ एक सिलेक्ट कर लीजिए, एक करते हैं सिर्फ। ये जो सारी ज्ञान की बातें होती हैं ना ये सारी एक-दूसरे के साथ इंटरकनेक्ट होती हैं। अगर आप सिर्फ किसी के गुण देखते हैं मतलब उनके अन्दर की कमज़ोरी आपको दिखाई ही नहीं देती। आपका ध्यान ही नहीं जाता उस तरफ तो एक बात को आपको पक्का करने से क्या होगा? आपका मन हमेशा साफ रहेगा। मैल आयेगी ही नहीं, दाग पड़ेगा ही नहीं क्योंकि अवगुण देखा ही नहीं ना, कमज़ोरी देखी ही नहीं। तो मन में आयेगी ही नहीं, और जब मन में आयेगी ही नहीं तो ओवर थिंकिंग होगी ही नहीं। ओवर थिंकिंग होता ही तब है जब निगेटिव बातें मन पर चलती हैं। जब किसी के अन्दर का अवगुण दिखेगा ही नहीं तो जजमेंटल किस बात पर होंगे? क्रिटिकल उनके बारे में किस बात पर होंगे। अपने आप एक्सेप्टेंस (स्वीकृति) आ गई। क्योंकि हमने उसके अन्दर सिर्फ गुण ही देखा। गुस्सा किस पर करेंगे? जब हमें उनके अन्दर कोई गलत बात दिखाई ही नहीं दी। तो ओटोमेटिकली हमारे से दुआएं जा रही हैं।

जब आप इनमें से किसी भी एक बात को पकड़ लेंगे तो उसकी पूरी चेन बनती जायेगी सारी बातों के साथ। जब नाराज़ होंगे ही नहीं, बुरा कुछ लगेगा ही नहीं तो माफ करेंगे किस बात के लिए! और जब माफ करना ही नहीं होगा तो भूलने के लिए कुछ रहेगा ही नहीं। ये सारी चीज़ें हो जायेंगी एक छोटी-सी चीज़ से। सामने वाले के अन्दर सिर्फ विशेषता देखनी है, सिर्फ गुण देखने हैं। ज्ञान इतना ब्यूटीफुल है, इतना पॉवरफुल है ऐसे लिस्ट देखें तो लगेगा कि ओहो बाबा! मुझे इतनी सारी चीज़ें करनी हैं क्या? मेरे अन्दर इतनी सारी चीज़ों को चेंज करना है! इनको ऐसे देखकर ऐसे नहीं सोचना कि इतनी सारी चीज़ें करनी हैं। इतनी सारी चीज़ें नहीं करनी हैं। इनमें से एक चीज़ करनी है। यद्यपि अगर हम ये सिम्पल चीज़ लें कि अवगुण नहीं देखना, गुण देखना है।

अब सारा दिन सामने वाले के अन्दर जो दिखाई देता है ना कि कौन-सी कमज़ोरी है, कौन-सी गलती है और ये सिर्फ अपने काम के क्षेत्र में नहीं घर में भी तो दिखाई देता है, बच्चों के अन्दर भी तो दिखाई देता है। ये बात ठीक नहीं है, ये बात ठीक नहीं है। अब क्यों नहीं अवगुण देखना, क्यों गुण देखना है। गुण ग्रहण करना। और क्यों कमज़ोरी नहीं देखना? कैसे नहीं देखेंगे, सामने दिख रही है, दिखाई दे रही है। तो नहीं देखने का क्या मतलब है! दो चीज़ें कौन-सी हैं जो देखती हैं एक है ये आँखें, इन आँखों से सबकुछ दिखाई देगा। सिर्फ आपके आस-पास के लोगों की गलती नहीं दिखाई देगी सारी सृष्टि पर जो गलती हो रही है वो भी तो हम इन आँखों से देखते हैं ना! फोन उठाओ लोगों की गलतियां दिखाई देती हैं, टीवी ऑन करो तो लोगों की गलतियां दिखाई देती हैं। जो नहीं भी देखना हो वो यहाँ से, वहाँ से कोई फॉरवर्ड करके हमें सबकी गलतियां दिखाता है। सिर्फ अपने घर में, अपने देश में नहीं दूसरे देशों में कौन-कौन क्या-क्या गलतियां कर रहा है वो भी सारा दिन दिखाई दे रहा है। वो सब दिखाई देंगी हमें, आँख बंद नहीं हो सकती, कान बंद नहीं हो सकते।

लोगों के शब्द सुनाई देंगे, लोगों की गलतियां दिखाई देंगी। लोगों की कमज़ोरियां-अवगुण दिखाई देंगे। कौन-सी आँख को दिखाई देंगे, इन स्थूल आँख को दिखाई देंगे। इन स्थूल कानों को सुनाई देंगे। लेकिन अभी हमने क्या सीखा कि अवगुण को नहीं देखना, गुण ग्रहण करना। इन स्थूल आँखों से दिखाई देगा, लेकिन यहाँ मन में वो ग्रहण नहीं होना चाहिए। मन-चित्त पर अगर किसी का अवगुण आया आँखों में दिखाई देगा, और मुख से राय भी देनी है। आप ऐसा नहीं आप ऐसा कर लीजिए। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो ये एक्शन लिया जायेगा। ये तो सारा दिन करना है। अगर हम किसी रोल में हैं, हम उसके लिए ज़िम्मेवार हैं, और कुछ तो नहीं आप अपने बच्चे की आप ब्रिंगिंग के लिए जिम्मेवार हैं, अगर आपने उनको बोला ही नहीं कि आपके अन्दर जो गलती हैं आपको उनको कैसे चेंज करना है। तब तो पैरेंटिंग में प्रॉब्लम आ जायेगी। लेकिन फिर भी क्यों कहा कि अवगुण नहीं देखना, उसको मन में नहीं रखना है...

- क्रमशः

यह जीवन है

किसी से बदला लेने का नहीं बल्कि खुद को बदल लेने का विचार ज़्यादा अच्छा है। क्योंकि महत्वपूर्ण यह नहीं कि दूसरे हमें गलत कहते हैं, बल्कि यह है कि हम गलत नहीं करते हैं। एक बात हमेशा याद रखें : बदले की भावना केवल हमारे समय को ही नष्ट नहीं करती... बल्कि सेहत को भी नष्ट करती है। इसलिए कोशिश ज़रूर करो मगर बदला लेने की नहीं बल्कि खुद को बदलने की...

क्योंकि जब हम स्वयं का सकारात्मक परिवर्तन करते हैं तो जीवन में सदा खुशी की अनुभूति होती है, और जीवन सारी उलझनों से ऊपर खुशनुमा बन जाता है। लेकिन जब हम नकारात्मक चिंतन या व्यर्थ चिंतन में होते हैं, तो दु:ख की अनुभूति होती है और जीवन बोझिल हो जाता है। इसलिए खुद को सदा खुश या खुशनुमा माहौल में ही रखने का प्रयास करते रहना चाहिए, फलस्वरूप हम व्यर्थ की उलझनों से स्वत: ही मुक्त होते जाएंगे।

राजकोट-गुज.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ के बिज़नेस विंग द्वारा व्यापारियों के लिए आयोजित 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम में ब्र.कु. अंजू बहन, ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. नलिनी बहन, ब्र.कु. दक्षा बहन तथा शहर के अग्रणी व्यापारी गण उपस्थित रहे।

जीरापुर-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए न्यायाधीश श्रीमति दिव्या गुप्ता, उत्कृष्ट विद्यालय की प्राचार्य रेखा बैरागी, वरिष्ठ एडवोकेट उर्मिला भावसार, ब्र.कु. मधु दीदी तथा अन्य।

कोटा जंक्शन(राज.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर लायंस कोटा क्लब साउथ द्वारा ब्र.कु. प्रीति बहन का सम्मान करते हुए जिला शिक्षा अधिकारी श्रीमति मिथलेश शर्मा, लायंस क्लब अध्यक्ष डॉ. जगदीश शर्मा, चिल्ड्रन कॉलेज बी.एड की प्रिन्सीपल अनामिका राठौर, चिल्ड्रन एजुकेशन ग्रुप के ओनर एस.ए. खान साहब, श्रीमति निशा धूत,क्षेत्रीय अध्यक्ष, अशोक जैन,लायंस क्लब सचिव तथा अन्य।

खजुराहो-म.प्र.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित 'भारत को स्वर्णिम बनाने में मीडिया की अहम भूमिका' विषयक कार्यक्रम में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका एवं समाज सेवा प्रभाग की क्षेत्रीय संयोजिका ब्र.कु. शैलजा बहन, वरिष्ठ पत्रकार राजीव शुक्ला एवं सुनील पांडे, ब्र.कु. कल्पना बहन, ब्र.कु. रजनी बहन, ब्र.कु. नीरजा बहन, ब्र.कु. पिंकी बहन, ब्र.कु. विद्या बहन तथा अन्य भाई-बहनों सहित राजनगर तहसील क्षेत्र से बड़ी संख्या में पत्रकार गण शामिल रहे।

इंदौर-प्रेमनगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के स्थानीय सेवाकेन्द्र एवं भारतीय सिंधु सभा महिला प्रभाग द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ के अनुभूति भवन में दादी हृदयमोहिनी के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस एवं अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'स्वर्णिम भारत की स्थापना में महिलाओं का योगदान' विषयक कार्यक्रम के दौरान श्रीमति मंगवानी,पार्षद,खातीवाला टैंक, अमृता सोलंकी,थाना इंचार्ज,राजेन्द्र नगर, विनीता मोटवानी,साहित्यकार, सपना खत्री,साइक्लिस्ट, योगिता छगानी,कथक, रोमा फेरवानी,योगा टीचर, जाह्नवी चंदवानी,मिसेज़ इंडिया 2020, ब्र.कु. शशि दीदी,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. यशवनी बहन,उपसेवाकेन्द्र संचालिका,बिजलपुर, ब्र.कु. शारदा बहन,उपसेवाकेन्द्र संचालिका,बैराठी कॉलोनी तथा बड़ी संख्या में अन्य महिलायें उपस्थित रहीं।

सादाबाद-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के 'शिव शक्ति भवन' में अमर उजाला के बैनर तले आयोजित 'अपराजिता' कार्यक्रम में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका सादाबाद प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. भावना बहन, स्थानीय वरिष्ठ अमर उजाला पत्रकार मुकेश शर्मा, कुंवर राम जी लाल आर्य इंटर कॉलेज की प्रधानाचार्य बहन स्नेहलता पचोरी, समाजसेवी बहन रमा शर्मा, ब्र.कु. मिथलेश बहन, बी.के राधा बहन व अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

कर्म का आचरण किया...

- पेज 4 का शेष...

देवताओं के अंदर दिव्य संस्कार होते हैं। जब हम अपने अंदर वह दिव्य संस्कार जागृत करते हैं तो जीवन के अंदर आगे बढ़ने लगते हैं। वे दैवी संस्कार, वे देवता तुम लोगों की उन्नति करेंगे। जीवन रूपी यज्ञ की शुद्धि के लिए दैवी संस्कार की वृद्धि करना आवश्यक है।

पहले के जमाने में जब कई परिवार इकट्ठा रहते थे, तब दादा अपने पोते को उंगली पकड़ कर मंदिर तक घुमाने ले जाते थे और जब वह हाथ जोड़कर प्रणाम करते थे तो ये देख कर पोता भी हाथ जोड़ कर प्रणाम करता। साष्टांग प्रणाम करते तो पोता भी करता और जब वे दान पेटी में एक रूपया डालते तो वो भी धोती खींचने लगता कि मुझे भी दान पेटी में पैसे डालने हैं और फिर थोड़ी देर मंदिर की सीढ़ियों पर बैठ कर वापस आ जाते थे। पहले दिन तन और धन गया दूसरे दिन शाम होते ही मन जाता है तो पोता दादा को कहता है चलो जाना है। अगर दादा ने मना किया तो दादी को ले जाता है। साष्टांग प्रणाम करके दादी को भी करने के लिए कहता है और 10 पैसे मांगता है। जब तक ना दो तो उधम मचाता है। इस तरह संस्कार दिए जाते थे।

आज कल माता-पिता शहरों में रहते हैं। दादा-दादी कहीं गांव में। माता-पिता दोनों ही काम पर जाते हैं। और जब काम से आते हैं तो पिता बच्चे से कहते हैं- बेटा पैसे लो और नीचे से सिगरेट लेकर आओ, बच्चा लाकर देता है। पिता सिगरेट पीकर कहते हैं- सर दर्द कम हुआ। पहले दिन तन और धन गया दूसरे दिन अपने आप बच्चे का मन जाता है और बच्चा कहता है मैं भी सिगरेट पी लूं सर दर्द कम होगा।

आज की दुनिया में ये संस्कार दिए जाते हैं इसीलिए जीवन रूपी यज्ञ अशुद्ध होता जा रहा है। जहाँ जीवन रूपी यज्ञ के शुद्धिकरण की प्रक्रिया में जो कर्म का आचरण किया जाता है वही यथार्थ रूप में कर्म योग है।

मंथन करने के लिए तो बहुत खज़ाना है। इसमें मन को बिज़ी रखना है। समय की रफ्तार तेज है व आप लोगों के पुरुषार्थ की रफ्तार तेज है? अगर समय तेज चल रहा है और पुरुषार्थ ढीला है तो उसकी रिज़ल्ट क्या होगी? समय आगे निकल जायेगा और पुरुषार्थी रह जायेंगे। समय की गाड़ी छूट जायेगी। सवार होने वाले रह जायेंगे। समय की कौन-सी तेज देखते हो? समय में बीती को बीती करने की तेज है। वही बात को समय फिर कब रिपीट करता है? तो पुरुषार्थ की जो भी कमियाँ हैं उसमें बीती को बीती समझ आगे हर सेकंड में उन्नति को पाते जाओ तो समय के समान तेज चल सकते हो। समय तो रचना है ना! रचना में यह गुण है तो रचयिता में भी होना चाहिए। ड्रामा क्रिएशन है तो क्रिएटर के बच्चे आप हो ना! तो क्रिएटर के बच्चे क्रिएशन से ढीले क्यों? इसलिए सिर्फ एक बात का ध्यान रहे कि जैसे ड्रामा में हर सेकंड अथवा जो बात बीती, जिस रूप से बीत गयी वह फिर से रिपीट नहीं होगी फिर रिपीट होगी 5000 वर्ष के बाद। वैसे ही कमज़ोरियों को बार-बार रिपीट करते हो? अगर यह कमज़ोरियां रिपीट न होने पाएं तो फिर पुरुषार्थ तेज हो जायेगा। जब कमज़ोरी समेटी जाती है तब कमज़ोरी की जगह पर शक्ति भर जाती है। अगर कमज़ोरियां रिपीट होती रहती हैं तो शक्ति नहीं भरती। इसलिए जो बीता सो बीता, कमज़ोरी की बीती हुई बातें फिर संकल्प में भी नहीं आनी चाहिए। अगर संकल्प चलते हैं तो वाणी और कर्म में आ जाते हैं।

संकल्प में खत्म कर देंगे तो वाणी और कर्म में नहीं आयेंगे। फिर मन-वाणी-कर्म तीनों शक्तिशाली हो जायेंगे। बुरी चीज़ को सदैव फौरन ही फेंका जाता है। अच्छी चीज़ को प्रयोग किया जाता है तो बुरी बातों को ऐसे फेंको जैसे बुरी चीज़ को फेंका जाता है। फिर समय पुरुषार्थ से तेज नहीं जाएगा। समय का इंतज़ार आप करेंगे तो हम तैयार बैठे हैं। समय आये तो हम जाएं। ऐसी स्थिति हो जाएगी। अगर अपनी तैयारी नहीं होती है तो फिर सोचा जाता है कि समय थोड़ा हमारे लिए रुक जायेगा।

बाढ़-बिहार। स्थानीय सेवाकेन्द्र ओम् शांति भवन में ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका डॉ. दादी जानकी के द्वितीय पुण्य स्मृति दिवस को 'वैश्विक आध्यात्मिक जागृति दिवस' के रूप में मनाया गया। इस मौके पर ब्र.कु. ज्योति बहन, श्री बाल शनि धाम मंदिर बाढ़ के संस्थापक नागा शिव जी मुनि उदासीन, संस्थान के वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. विपिन भाई सहित अन्य गणमान्य लोगों एवं ब्र.कु. भाई-बहनों ने दादी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

कथा सरिता

कवच से सुरक्षा

एक सरोवर में विशाल नाम का एक कछुआ रहा करता था। उसके पास एक मजबूत कवच था। यह कवच शत्रुओं से बचाता था। कितनी बार उसकी जान कवच के कारण बची थी। एक बार भैंस तालाब पर पानी पीने आई। भैंस का पैर विशाल पर पड़ गया। फिर भी विशाल को कुछ नहीं हुआ। उसकी जान कवच से बची थी। उसे काफी खुशी हुई क्योंकि बार-बार उसकी जान बच रही थी।

यह कवच विशाल को कुछ दिनों में भारी लगने लगा। उसने सोचा इस कवच से बाहर निकल कर ज़िंदगी को जीना चाहिए। अब मैं बलवान हो गया हूँ। मुझे कवच की ज़रूरत नहीं है। विशाल अगले ही दिन कवच को तालाब में छोड़कर आस-पास घूमने लगा।

अचानक हिरण का झुंड तालाब में पानी पीने आया। ढेर सारी हिरनियां अपने बच्चों के साथ पानी पीने आई। उन हिरणियों के पैरों से विशाल को चोट लगी, वह रोने लगा। आज उसने अपना कवच नहीं पहना था। जिसके कारण उसे काफी ज़ोर से चोट लगी। विशाल रोता-रोता वापस तालाब में गया और कवच को पहन लिया। कम से कम कवच से जान तो बचती है।

सीख : प्रकृति से मिली हुई चीज़ को हमें सम्मान पूर्वक स्वीकार कर लेना चाहिए।

मित्रता हो निःस्वार्थ भाव से

मोती तीसरी कक्षा में पढ़ता था। वह स्कूल जाते समय अपने साथ दो रोटी लेकर जाता। रास्ते में मंदिर के बाहर एक छोटी-सी गाय रहती थी। वह दोनों रोटी उस गाय को खिलाया करता था। मोती कभी भी गाय को रोटी खिलाना नहीं भूलता। कभी-कभी स्कूल के लिए देर होती तब भी वह बिना रोटी खिलाए नहीं जाता। स्कूल में लेट होने के कारण मैडम डांट भी लगाती थी। वह गाय इतनी प्यारी थी, मोती को देखकर बहुत खुश हो जाती। मोती भी उसको अपने हाथों से रोटी खिलाता। दोनों बहुत अच्छे दोस्त बन गए थे। एक दिन की बात है मोती बाज़ार से सामान लेकर लौट रहा था। मंदिर के बाहर कुछ लड़कों ने उसे पकड़ लिया। मोती का सामान छीनने लगे। गाय ने मोती को जब संकट में देखा तो उसको बचाने के लिए दौड़ी। गाय को अपनी ओर आता देख सभी लड़के नौ-दो ग्यारह हो गए। मोती ने गाय को गले लगा लिया, बचाने के लिए धन्यवाद कहा।

सीख : गहरी मित्रता सदैव सुखदायी होती है। निःस्वार्थ भाव से व्यक्ति को मित्रता करनी चाहिए। संकट में मित्र ही काम आता है।

निरन्तर प्रयास करते रहें

रानी एक चींटी का नाम है जो अपने दल से भटक चुकी है। घर का रास्ता नहीं मिलने के कारण, वह काफी देर से परेशान हो रही थी। रानी के घर वाले एक सीध में जा रहे थे तभी जोर से हवा चली,सभी बिखर गए। रानी भी अपने परिवार से दूर हो गई। वह अपने घर का रास्ता ढूंढने में परेशान थी।

काफी देर भटकने के बाद उसे जोर से भूख और प्यास लगी। रानी जोर से रोती हुई जा रही थी। रास्ते में उसे गोलू के जेब से गिरी हुई टॉफी मिल गई। रानी के भाग्य खुल गए। उसे भूख लग रही थी और खाने को टॉफी मिल गयी थी। रानी ने जी भर के टॉफी खाई, अब उसका पेट भर गया। रानी ने सोचा क्यों न इसे घर ले चलूँ, घर वाले भी खाएंगे। टॉफी बड़ी थी, रानी उठाने की कोशिश करती और गिर जाती। रानी ने हिम्मत नहीं हारी। वह दोनों हाथ और मुंह से टॉफी को मजबूती से पकड़ लेती है। घसीटते-घसीटते वह अपने घर पहुंच गई। उसके मम्मी-पापा और भाई-बहनों ने देखा तो वह भी दौड़कर आ गए। टॉफी उठाकर अपने घर के अंदर ले गए। फिर क्या था? सभी की पार्टी शुरु हो गई।

सीख : लक्ष्य कितना भी बड़ा हो निरंतर संघर्ष करने से अवश्य प्राप्त होता है।

ब्रह्मपुर-पी.यू.आर.सी.(ओडिशा)। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित 'आत्मनिर्भर किसान सम्मेलन' के दौरान सभी किसानों को आत्मनिर्भर बनने की शपथ दिलाते हुए राजयोगी ब्र.कु. शशिकांत भाई, ग्रासिम के युनिट हेड दिगविजय पांडे, गंजाम जिले के 'आत्मा' के प्रकल्प अधिकारी अजीत महाराणा, ब्रह्माकुमारीज़ ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. राजू भाई, ब्रह्मपुर उपक्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी, ब्र.कु. सुमंत भाई, ब्र.कु. देवराज भाई, पीयूआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. माला दीदी तथा अन्य।

प्रेम के पनपने का आधार...

आप देखेंगे तो मुख्यतः सात ऐसे कारण हैं जो मनुष्य के मन में प्रेम, प्यार अथवा आकर्षण पैदा करने वाले होते हैं। वैसे तो बहुत कारण हो सकते हैं लेकिन आप भी सोचें कि प्रेम पैदा करने वाले ऐसे कौन से कारण हो सकते हैं। तो आपके मन में क्या आ रहा है? हाँ... यूँ तो... जहाँ प्राप्ति होती है वहाँ मनुष्य का मन चला जाता है। और सोचो, जो सर्वमान्य हो और व्यवहारिक भी। हम आपके इस प्रश्न की उत्सुकता को समाप्त करने के लिए बता ही देते हैं...। पहला, सम्बन्ध। दूसरा, सौंदर्य। तीसरा, सुखदायक व्यक्ति। चौथा, सहयोगी व सहकारी। पाँचवा, सहानुभूति। छठा, रचना। सातवाँ, गुणवान व्यक्ति। ठीक है ना! मन की उत्सुकता खत्म हो गई! अब हम एक-एक को विस्तृत रूप से समझते हैं।

जहाँ सम्बन्ध हो, वहाँ प्यार अथवा प्रेम होना स्वाभाविक है ही। माता-पुत्र, पति-पत्नी, दोस्त, भाई-भाई, ये सभी सम्बन्ध ही हैं जो प्रेम के विभिन्न प्रकारान्तर अथवा रूपान्तर पर टिके हुए हैं। कहावत भी है, 'अपने और परायों में सदा अंतर होता है, ब्लड इज़ थिकर देन वॉटर।' जिनसे मनुष्य का सम्बन्ध हो, उन्हीं की याद उसे आया करती है और उनके प्रति ही उसका थोड़ा बहुत समर्पण भाव रहता है। अतः यदि यह बात मनुष्य की बुद्धि में स्पष्टतः बैठ जाये कि परमात्मा तो आत्मा के माता-पिता, सखा-बंधु, नहीं-नहीं बल्कि सर्वस्व हैं, तब तो मनुष्य का परमात्मा से सौ गुणा प्यार होगा। पिता-पुत्र में, सखा-सखा में, भाई-बहन में, सजनी और साजन में जो प्यार होता है तथा अन्यान्य सभी सम्बन्धों के प्यार को यदि इकट्ठा किया जाये तो मनुष्य को उससे भी अधिक प्यार परमात्मा से हो जायेगा। क्योंकि सांसारिक लोगों के साथ तो हमारे दैहिक, नश्वर अथवा एकांगी नाते हैं जबकि आत्मा का सच्चा मीत तो एक परमात्मा है।

सम्बन्ध से अतिरिक्त सौंदर्य भी मनुष्य के मन में प्यार पैदा करता है। यह सौंदर्य रूप-रंग का भी हो सकता है, चरित्र का भी और किसी अन्य कला(वाद्य कला, नृत्य कला) से संबंधित भी। परंतु स्थायी एवं सर्व प्रकार का सौंदर्य तो एक परमात्मा ही में है। संसार में जब कोई व्यक्ति सुंदर मालूम होता है, तो मानव का मन उसे पाने, अपनाने या स्वयं ही उसका हो जाने की चेष्टा करता है व उसके रूप पर मुग्ध हो जाता है। इसी प्रकार यदि मनुष्य को यह ज्ञात हो जाये कि संसार के सारे सौंदर्य का सार एक परमात्मा ही में है और उसके रूप को काल, कष्ट, कुभाव एवं काम छूते तक नहीं, तो वे उस 'मनमोहन' के रूप-लावण्य को जानकर उससे प्रीति किये बिना नहीं रह सकेंगे।

खेद की बात है कि मनुष्य सांसारिक सौंदर्य पर लट्टू होकर अपना सर्वस्व लुटा देता है अथवा अपने जीवन को भी भेंट कर देता है। सुखदायक, सहयोगी तथा सहानुभूति वाला जैसे सुंदर व्यक्ति एवं वस्तु प्यारे होते हैं, वैसे ही सुखदायक व्यक्ति, सहयोगी तथा सहकारी के प्रति भी मनुष्य के मन में प्यार पैदा होता है। यदि कोई व्यक्ति आड़े समय में हमारा हाथ बटाये, डूबे हुए को निकाल ले, मरते हुए को बचा ले, किसी की भूख-प्यास मिटा दे, किसी भी प्रकार की सहायता करे अथवा सहानुभूति करे एवं मन का हाल लेकर मदद करे तो उसके प्रति मनुष्य स्वयं को कृतकृत्य मानता है, तथा उस पर अपना जीवन भी न्यौछावर करने के लिए तैयार हो जाता है। ठीक इसी प्रकार यदि मनुष्य को ज्ञात हो कि कलियुग के अंत में जब सभी की जीवन-नाव, विषय-नाव, विषय-विकारों में डूब रही होती है, जब सबका आत्मन दुःख-दरिद्रता अथवा विकार-तृष्णा से पीड़ित होकर मर-सा रहा होता है, तब परमपिता परमात्मा स्वयं अवतरित होकर जीवन-नैया को उबारते और योग तथा सहयोग द्वारा मुक्ति एवं जीवनमुक्ति देते हैं। तो ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं हो सकता जिसकी प्रीति प्रभु से न जुटे।

रचना और गुणवान के साथ प्रीति

हम उपरोक्त पाँच कारणों के अतिरिक्त बता आयें हैं लेकिन अब छठा कारण होता है रचता और रचना का सम्बन्ध। रचना का अपने रचयिता से प्यार होता ही है। यही तो कारण है कि पुत्र का अपने माता-पिता से, पत्नी का पति से तथा मनुष्य को अपने मकान, सामान तथा अन्य कृतियों एवं रचनाओं से भी प्यार होता है। ठीक इसी प्रकार यदि मनुष्य की वृत्ति का दिशा-निर्देशन करते हुए कलियुगी बच्चे की बजाय सतयुगी श्रीकृष्ण के समान बच्चा पाने की चेष्टा करे अथवा सतयुग में नारायण जैसा पति पाने का मनोरथ तो इस कलियुगी, अपवित्र गृहस्थी से उसका मोह नष्ट हो जायेगा और उसकी प्रीति परमात्मा से जुट जायेगी, क्योंकि श्रीकृष्ण के समान सम्बन्धी तो तभी मिल सकते हैं जब मनुष्य परमात्मा से योगयुक्त होकर मनुष्य से देवता बने।

इसके अलावा हम देखते हैं कि मनुष्य का मन स्वतः ही गुणवान व्यक्तियों की ओर आकर्षित होता है। जिसका स्वभाव सरल एवं मधुर हो, जो नम्रचित्त एवं सदा हर्षितमुख हो, जो संतोषी एवं स्नेही हो, उससे हमारा भी स्नेह होता है। इसके विपरीत जो असहिष्णु एवं आलसी हो या निंदा एवं चुगली करने वाला हो, उससे हमारा भी प्यार समाप्त होता है। अतः मनुष्य यदि इस बात को ध्यान में रखे कि परमात्मा तो सर्व गुणों का असीम भंडार है, तो उससे मन की प्रीति जुड़ना स्वाभाविक है। आप भी और कारण सोच कर अपनी बुद्धि को इस विनाशी संसार से व सम्बन्ध से निकाल कर परमात्म प्रेम के सम्बन्ध को अपनाकर अपने जीवन को धन्य-धन्य बना सकते हैं।

अम्बिकापुर-चोपड़ापारा(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी जानकी के द्वितीय स्मृति दिवस को वैश्विक आध्यात्मिक जागृति दिवस के रूप में मनया गया। इस मौके पर टी.एस. सिंहदेव,कैबिनेट मंत्री,स्वास्थ्य एवं पंचायत विभाग,छ.ग. शासन, डॉ. प्रीतम राम सिंह,विधायक,लुण्ड्रा कैबिनेट मंत्री मेडिकल बोर्ड अध्यक्ष,छ.ग. शासन, डॉ. पी.एस. सिंह सिसोदिया,संयुक्त संचालक,सरगुजा संभाग स्वास्थ्य विभाग, राकेश गुप्ता,जिला कांग्रेस अध्यक्ष, शैलेष सिंगदेव,किसान कांग्रेस प्रदेश उपाध्यक्ष एवं जनपद उपाध्यक्ष सीतापुर, सुरेन्द्र दुबे,कार्य पालन अभियंता,जल संसाधन सम्भाग बैकुण्ठपुर, सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

नगरोटा बगवां-हि.प्र.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में क्षेत्र के विधायक अरुण मेहरा, उनकी धर्मपत्नी सोनिया मेहरा तथा अन्य अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शीला बहन।

धमतरी-छ.ग.। महावीर इंटर कॉन्टिनेंटल सर्विस ऑर्गनाइज़ेशन पद्मावती महिला शाखा धमतरी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ब्र.कु. सरिता दीदी को सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए मोमेंटो, शॉल एवं श्रीफल द्वारा सम्मानित किया गया।

झोझूकलां-कादमा(हरियाणा)। हरियाणा योग आयोग एवं आयुष विभाग द्वारा कर्टेन राइज़र प्रोग्राम के अंतर्गत योगा विषय पर आयोजित जिला स्तरीय दो दिवसीय विचार गोष्ठी में ब्र.कु. वसुधा बहन को विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. वसुधा बहन एवं ब्र.कु. ज्योति बहन को स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित करते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अतिरिक्त जिला उपायुक्त डॉ. मनीष नागपाल। कार्यक्रम में हरियाणा योग आयोग के जिला संयोजक विकास राणा, आयुष विभाग के जिला अधिकारी डॉ. राकेश वशिष्ठ, जिला स्पोर्ट्स एवं योगा एसोसिएशन के अध्यक्ष बिशन सिंह आर्य, सचिव सुरेन्द्र सिंह आर्य के साथ-साथ योग एवं आयुष विभाग से जुड़े हुए सैकड़ों भाई-बहनें उपस्थित रहे।

मरोली-नवसारी(गुज.)। आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. मुकेश बहन, हेमलता बहन,तालुका पंचायत सभ्य, अमरीश मेहता,दूध मंडली प्रमुख, भरत मेहता,पंचायत सभ्य, दिनेश शाह,व्यापारी तथा अन्य।

चित्तौड़गढ़-राज.। दादी जानकी के पुण्य स्मृति दिवस पर दादी को श्रद्धा सुमन अर्पित करने के पश्चात् उपस्थित हैं मुम्बई आर्यन फिल्म प्रोडक्शन की टीम आर्यन माहेश्वरी, अर्जुन खटवानी, अमित चेचाणी, रेलवे के मनोज गुप्ता, ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. अनीता बहन तथा अन्य।

गुरूग्राम-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर वाप्कोस एवं एनपीसीसी के वुमेन इम्प्लॉय द्वारा संयुक्त तत्वाधान में वाप्कोस ऑफिस गुरुग्राम में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'महिलाएं : नए भारत की ध्वजवाहक' विषय पर मोटिवेशनल ट्रेनर ब्र.कु. पीयूष भाई, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. गिरिजा बहन आदि द्वारा सभी का मार्गदर्शन किया गया। कार्यक्रम में सभी वुमेन इम्प्लॉइज़ को विभिन्न क्षेत्रों में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस मौके पर आर.के. अग्रवाल,सीएमडी,वाप्कोस एंड एनपीसीसी, डायरेक्टर्स, चीफ एक्ज़ीक्युटिव डायरेक्टर्स तथा अन्य सीनियर ऑफिसर्स उपस्थित रहे।

समस्तीपुर-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी जानकी के द्वितीय पुण्य स्मृति दिवस पर अपनी भावनायें व्यक्त करते हुए डीआरएम आलोक अग्रवाल। मंचासीन हैं ब्र.कु. सविता बहन, एसडीओ रविंद्र कुमार दिवाकर व ब्र.कु. कृष्ण भाई। कार्यक्रम में ऑनलाइन माध्यम से बिहार राज्य उत्पादकता परिषद् के अध्यक्ष डी.के. श्रीवास्तव ने भी अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं।

डभरा-रायगढ़(छ.ग.)। परमात्मा शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन झाँकी का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए वरिष्ठ भाजपा नेता बहन संयोगिता युद्धवीर सिंह जूदेव, ब्र.कु. मंजू बहन, ब्र.कु. राधिका बहन, ब्र.कु. बेबी बहन तथा अन्य।

आगरा म्यूज़ियम-उ.प्र.। ग्राम नगला लालजीत स्थित विमला पार्क में विश्व महिला दिवस के अवसर पर आयोजित भव्य एवं मनोहारी कार्यक्रम में आगरा की महापौर एवं राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व सदस्य श्रीमति बेबी रानी मौर्य, ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. माला बहन, ब्र.कु. रेखा बहन, ब्र.कु. सावित्री बहन, महावीर सिंह, विजेंद्र भाई तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

मनुष्य सुख से ही बना है...

ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

आज मनुष्य की स्थिति को हम जब बहुत ध्यान से देखते हैं तो पाते कि ऐसी बहुत सारी बातें हैं जिसमें मनुष्य अपने आप को उलझा हुआ देखता है। लेकिन अगर इसको एक समानान्तर तरीके से देखा जाये तो हम पाते हैं कि मनुष्य निरन्तर सुख ही चाहता है। इसको हम कुछ उदाहरणों से देखते हैं, जैसे - अन्तिम अवस्था होती है, बिल्कुल मरने वाली स्थिति होती है बिल्कुल ही उसकी कर्मेन्द्रियां काम नहीं कर रही होती हैं, बिल्कुल ही वो शरीर छोड़कर जाने वाली स्थिति में होता है तो भी वो जीना चाहता है। क्यों जीना चाहता है, क्योंकि उसको अपने आपसे बहुत प्रेम है। उसका इस प्रकृति से बहुत प्रेम है। हालांकि उसका स्वरूप बदल गया लगाव के रूप में लेकिन आज हम उसको थोड़ा-सा इस पन्ने को दूसरे तरीके से समझने की कोशिश करते हैं, दूसरे पहलू की तरह से इसको समझते हैं कि मनुष्य का लगाव, जो आज बदल गया लगाव के रूप में लेकिन उसका स्वयं से इतना प्रेम है, रहने से इतना प्रेम है कि वो छोड़कर जाना नहीं चाहता।

इसी तरह मनुष्य प्रेम पाने के लिए या कहें जीने के लिए, सुख से रहने के लिए शादी करता है। बच्चे की अभिलाषा करता है। धन-धान्य की अभिलाषा करता है, इच्छा रखता है। लेकिन बहुत दिन तक उससे सुख लेने की कोशिश करता है। लेकिन जब फिर उन्हीं से कोई तकलीफ होती है, परेशानी होती है, दुःख होता, दर्द होता है तो उसको फिर से छोड़ने की इच्छा होती है। तो छोड़ने की इच्छा भी 'सुख की निशानी' और लेने की इच्छा भी 'सुख की निशानी' है। सुख लेने का भाव। मनुष्य का नेचर देखो सुख लेना है। ऐसे ही जब वो कभी संसार में है और एक समय है कि उसको पूरा संसार चाहिए, सब कुछ चाहिए। देखिए उन्हीं से तकलीफ हुई तो मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। ये क्या हमारे लिए प्रकट करता है कि हमारा नेचर सुख लेना है। मनुष्य जब कभी आत्महत्या का विचार भी करता है तो आत्महत्या भी प्रेम को ही दर्शाता है। आत्म

प्रेम को ही लेकर आगे बढ़ता है। मतलब जब बाहरी दुनिया से कोई तकलीफ आती है तो उसको कोई नहीं समझ पाता, तो अज्ञानता वश वो मन, बुद्धि को भी खत्म कर देता है। लेकिन उसको ये नहीं पता है कि उसको खत्म करने से हमारे अन्दर के जो थॉट्स(विचार) हैं, हमारे अन्दर की जो फीलिंग्स हैं, वो नहीं खत्म होती। तो निरन्तर मनुष्य भाग रहा है। अब इसको अगर एक तरह से देखा जाये कि अगर हमारा स्वरूप सुख नहीं होता, हमारा स्वरूप प्रेम नहीं होता। हमारा स्वरूप अगर दुःख होता, दुःख देना, दुःख लेना तो हम निरन्तर उसकी तलाश के लिए कहीं जाते नहीं घर में बैठे ही सबकुछ मिल जाता है, लेकिन जैसे ही कोई थोड़ी तकलीफ होती है तो चाहे हम मंदिर जाते हैं, चाहे किसी भी स्थान पर जाते हैं, कहीं किसी से मिलने जाते हैं, क्यों? क्योंकि सुख मिले।

हमारा स्वरूप सुख है। इसीलिए छोटे-छोटे सुखों की तलाश निरन्तर जो मनुष्य पूरे जीवन करता है। वो हमको सिद्ध करता है कि वह उसी आनन्द की खोज में वो निरन्तर भटकता रहता है। तो जो व्यक्ति जिस चीज़ से बना होता है। ये लाईन हमारे जीवन के लिए बहुत ही कारगर है कि 'जो व्यक्ति जिस चीज़ से बना है' वो उसी की तलाश पूरे जीवन करता है। क्योंकि हम सुख से बने हैं, प्रेम से बने हैं तो निरन्तर हम उस सुख और प्रेम को कहीं न कहीं ढूढ़ते रहते हैं। आज के दौर में ले लो - आज बगावत करता है कोई भी छोटा बच्चा या बच्ची या कोई भी ऐसा परिवार अपने परिवार से, अपने माँ-बाप से, अपने समाज से, संसार से बगावत करता है। एक अन्धप्रेम के चक्कर में या एक दैहिक प्रेम के चक्कर में। चाहे वो प्रेम दैहिक ही क्यों न हो लेकिन फिर भी वो बगावत कर रहा है। कारण? सुख चाहिए। कारण? मुक्ति चाहिए। सुख, मुक्ति में ही है, बन्धन मुक्त होने में ही है। लेकिन आज जिस वो चीज़ में वो बन्धता है क्योंकि वो इस दुनिया की है, नश्वर है फिर थोड़े दिन बात किसी और सुख की तलाश होती है। इसलिए 'अज्ञानता' ही है सिर्फ एक पर्दा जो हमको इन सारे बन्धनों में जकड़े हुए है। नहीं तो थोड़ा-सा भी समझ आ जाये कि सुख, प्रेम हमारा एक स्वरूप है, हमारे अन्दर की स्थिति है।

तो हम बाहर भी सबके साथ रहेंगे, सबके साथ जीयेंगे। लेकिन कोई भी किसी भी चीज़ के लिए वजह नहीं होगा। खुशी की वजह, शान्ति की वजह, प्रेम की वजह। सिर्फ रहेंगे, जीयेंगे और आगे बढ़ेंगे। इसी का ज्ञान हम दुनिया भर में दे रहे हैं, सबको समझा रहे हैं कि आपको इस समाज में रहना है, सबके साथ रहना है। लेकिन कोई भी सुख, कोई भी प्रेम, कोई भी आनन्द, बाहरी चीज़ों, बाहरी दुनिया में जो आप भटक रहे हैं, दौड़ रहे हैं, सम्भालने के लिए, लेने के लिए, पाने के लिए। वहाँ कहीं जाने की आवश्यकता नहीं। आप उसको अपने अन्दर महसूस कर सकते हैं। डिपेंडेंसी खत्म हो जायेगी।

तो वो डिपेंडेंसी कैसे खत्म हो? आत्मनिर्भर, आत्म प्रेम कैसे हो? आत्मनिर्भरता प्रेम में कैसे आये जिससे पूरे जीवन हम किसी के होने या न होने की वजह से दुःखी हों तो वो अज्ञानता ही कहा जाता है। तो कोई हो या न हो, कोई जीये या न जीये, कोई रहे या न रहे लेकिन मैं निरन्तर उसी स्वरूप में हूँ। उसी आनन्द की स्थिति में ही हूँ। यही ज्ञान है, यही समझ है, यही गहराई है। इसलिए 'मनुष्य सुख से बना है' और निरन्तर सुख से ही आगे बढ़ रहा है। तो इस तरह से आप अपने आप को समझा सकते हैं, देख सकते हैं। आज की युवा पीढ़ी भी इसको समझ सकती है। और युवा पीढ़ी सबसे ज़्यादा क्यों समझें? क्योंकि सबसे ज्यादा इस अन्धदौड़ में शामिल है इसलिए टेंशन है, इसलिए परेशानी है। तो छोड़ें उसे, समझें इसे और आगे बढ़ें।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : मैं फरीदाबाद से हूँ। मैं 6 साल से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ी हुई हूँ। मेरा सवाल ये है कि हमारी प्रॉपर्टी फँसी हुई है। हमने ब्याज पर पैसे लेकर बहुत सारे फ्लैट्स लिए थे। वो फ्लैट्स अभी बिक नहीं रहे। और ब्याज पर जो पैसा लिया था वो भी हमें मास दर मास चुकाना पड़ रहा है। तो इससे परिवार में जो आर्थिक और मानसिक परेशानी है उससे सभी जूझ रहे हैं, कृपया इसका कुछ उपाय बतायें?

उत्तर : मैं सभी को एक बात कहूँगा कि कभी भी अपनी सारी सम्पत्ति इनवेस्ट नहीं करनी चाहिए। और न ही कभी उधार लेकर लगाना चाहिए। कम से कम हमारा परिवार बहुत अच्छा चलता रहे उसके लिए हमें बिल्कुल सेफ अपनी अलग सम्पत्ति रख लेनी चाहिए कि इतना ही हमें अपने काम-धंधे में लगाना है, ये हमारा सेफ है इतना मूल। बाकी इससे हमें अपना कारोबार आगे बढ़ाना है। कम से कम परिवार, बच्चे, उनकी पढ़ाई सारा जो कार्य है रोज़ का जो खर्च है उसमें तो कुछ दुविधा न हो जाये। मैं आपको कहूँगा कि आप बहुत अच्छा-सा एक प्रयोग कर लें,दो स्वमान का अभ्यास सवेरे उठकर 21 बार करेंगे। और वो दो स्वमान हैं मैं मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ, मैं विघ्नविनाशक हूँ। भाई साहब को बतायें और वो इस अभ्यास को सवेरे उठते ही 21 बार करेंगे। क्योंकि सवेरे का उठते ही जो हमारे पहले 10 मिनट होते हैं वो हमारा बहुत ही सुन्दर टाइम होता है। क्योंकि उस वक्त हमारा अवचेतन मन पूरी तरह से एक्टिव होता है इसलिए थोड़ा जल्दी उठें और फ्रेश रहें, प्रकृति का आनंद लें और सुन्दर विचार अपने मन में करें। मैं बहुत-बहुत भाग्यवान हूँ, मैं बहुत सफल हूँ अपने जीवन में, मेरा जीवन बिल्कुल निर्विघ्न है। एकदम आनंद के साथ और संकल्प करें कि जितनी भी प्रॉपर्टी मैंने खरीदी हुई है वो सब सेल हो गई है, सबकुछ अच्छा हो गया है और लक्ष्य रख लें कि ये काम 6 मास में हो गया है। इसको एन्जॉय करें सवेरे उठते ही। सबकुछ अच्छा हो गया है, सब बाधायें समाप्त हो गई हैं। और आपको 21 दिन तक मेडिटेशन का एक बहुत अच्छा प्लान बना लेना है। रोज़ एक घंटा, एक टाइम फिक्स करेंगे। वो टाइम एक दिन भी मिस नहीं होना चाहिए कि एक दिन ब्याह-शादी में जाना पड़ गया तो चलो आज छोड़ देते हैं,कोई नहीं कल से कर लेंगे ऐसा नहीं। बिल्कुल रेगुलरली सेम टाइम करेंगे, स्थान बदल जाये तो कोई बात नहीं। और यही दो स्वमान के साथ मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं विघ्नविनाशक हूँ पांच बार ये दोनों स्वमान को याद करें और शक्तिशाली एक घंटा मेडिटेशन करें। राजयोग की बहुत सुन्दर स्थिति कहते हैं कि जिसमें और संकल्प न हों केवल राजयोग के, परमात्मा के, आत्मा के संकल्प हों। ये जो आपकी स्थिति होगी वो विघ्न को नष्ट करेगी। आपके संकल्प काम करेंगे, आपकी योग शक्ति काम करेगी। और निश्चित रूप से आपके कार्य में आपको सफलता मिल जायेगी। दूसरा अभ्यास जो भाई साहब को करना है वो है मैं मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा हूँ, और मैं एक महान आत्मा हूँ। इन दो संकल्पों को अपनी दुकान, अपने केन्द्र में बैठकर जितनी देर भी हो, बीच-बीच में जितना भी टाइम बचता है, 10-15 मिनट तो इनको 10-15 बार कर लिया जाये। ऐसा दिन में कई बार कर लेने से केन्द्र के जो वायब्रेशन्स होंगे वो बड़े अट्रैक्टिव हो जायेंगे। वहाँ से प्युअर और पॉज़िटिव एनर्जी वायब्रेट होने लगेगी। और ये हमारे वायब्रेशन्स बहुत काम करते हैं। ऐसे अभ्यास करने से सबकुछ ठीक हो जायेगा।

प्रश्न : मेरा नाम रामलाल अग्रवाल है। मैं पिछले दस वर्षों से ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ा हुआ हूँ और पिछले वर्ष हमने अपनी बेटी की शादी की तो थोड़े ही दिनों के बाद उसके पति ने सुसाइड कर लिया और तभी से मेरी बेटी डिप्रेशन में है, सारे दिन कमरे में बंद रहती है और किसी से बातचीत भी नहीं करती। समझ में नहीं आता कि हम क्या करें?

उत्तर : हो सकता है कोई कारण ऐसा हो गया हो वो अपने को बहुत ज़िम्मेवार समझती हो कि मेरे कारण मेरे पति ने ऐसा कर लिया है। और हुआ हो किसी और कारण की वजह से। जब व्यक्ति डिप्रेशन में आता है तो कहीं न कहीं उनकी भावनाओं को बहुत ठेस लगती है। अब उनको ये सोचना चाहिए कि ये जो हो गया वो चाहे किसी भी कारण से हुआ हो, कोई भी उसका निमित्त बना हो लेकिन अब तो हमें अपने भविष्य को सुन्दर बनाना है। एक ही घटना पर तो हमें ठहर नहीं जाना है क्योंकि जीवन यहीं तो समाप्त नहीं हो जाता। अपने आप को इस चीज़ से निकालना होगा। आप अपनी बच्ची को बहुत अच्छे वायब्रेशन्स दें। क्योंकि वो परवश हो गई है निगेटिव एनर्जी के, डिप्रेशन के। वो उससे बाहर निकलना अगर चाहे भी तो उससे नहीं हो पा रहा है। आप रोज़ आधा घंटा उसके लिए मेडिटेशन करें। उनको सामने लाकर, आत्मा देखकर अच्छे वायब्रेशन्स दें। सवेरे एक टाइम फिक्स करके उन्हें अच्छे थॉट्स दें। वायब्रेशन्स देने का तरीका है मेडिटेशन में बैठें और सर्वशक्तिवान से मुझे शक्तियां आ रही हैं, पहले ये अभ्यास करें। फिर संकल्प करें मुझसे ये शक्तियों के वायब्रेशन उनको जा रहे हैं। जैसे एक फाउंटेन सुखों का, शक्तियों, शांति का, पवित्रता का उसको जा रहा है उससे माइंड टू माइंड बात करें चाहे वो कहीं भी है। आपसे दूर है या पास है। बात करें तुम तो बहुत अच्छी आत्मा हो, तुम तो भगवान की बच्ची हो। ये जीवन तो सुखों के लिए है। चलो तुम्हारे जीवन में एक बुरी घटना हो गई है अब इससे बाहर आ जाओ। तुम तो देवकुल की आत्मा हो। तुम्हारे सिर पर तो भगवान के आशीर्वाद का हाथ है। अभी निकलो इससे बाहर, अपने जीवन में न्यूनेस(नवीनता)लाओ। अपने भविष्य को उज्जवल बनाओ। तुम बहुत बुद्धिमान हो, तुम बहुत समझदार हो। तो ऐसा करने से उसमें जागृति आयेगी। उसके मन में आयेगा कि नहीं मुझे इससे बाहर निकलना है। तो ये दो चीज़ें करने से इन सब समस्याओं से वो बाहर आ जायेगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

सुबह की शुरुआत हो जीत से...!

हम एक बात जानते हैं, बहुत लोग पूछते तो नहीं, कहते तो नहीं, कइयों से सवेरे उठा नहीं जाता, बारह बजे तक सोते हैं, उठना संभव नहीं होता। कोई बिना काम ही बारह-एक बजे तक सोते हैं, फोन पर लगे रहते हैं, वे भी सवेरे नहीं उठेंगे। उनको तो बहुत ज़्यादा नुकसान होगा। सवेरे छः बजे तक अपने को चार्ज अवश्य कर लें। अपनी दिनचर्या को ठीक से सेट कर लें, क्योंकि ये सुंदर समय अब के बाद कभी नहीं आयेगा। रोज़ सवेरे आता है। सोच कर देखो, बाबा खुली ऑफर देता है, मुझसे जो चाहो ले लो। अगर ये समय हम बिताते रहे, सवेरे उठते ही यदि किसी की हार हो जाये तो जीत कैसे होगी! दिन की शुरुआत ही हार से हो गई। आँख खुली, संकल्प आया और सो जाऊँ, हार हो गई ना! एक संकल्प ने हरा दिया। पाँच बजे उठे फिर। निराशा होगी, प्रभु मिलन मिस हो गया। तो सवेरे से ही अपने को विजयी बनाना है।

अमृतवेले बाबा से विजय का तिलक

अमृतवेले का महत्त्व ज्ञान के द्वारा जानते हुए बाबा से बहुत कुछ प्राप्त कर लें। नहीं तो फिर कहते हैं, बाबा हमें मदद नहीं करता। बाबा की मदद बहुत मिलती है और बहुत मिल रही है। तो रोज़ सवेरे उठकर, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और विजयी रतन हूँ, ये तिलक बाबा से ले लेंगे, ये वरदान ले लेंगे। उसके लिए ये संकल्प करें... एक सेकण्ड में अनुभव करें कि मैं आकाश के ऊपर सूक्ष्म लोक में हूँ...इस सूक्ष्म लोक में चारों ओर ऐसा सफेद प्रकाश है, सफेद चांदनी है कि मानो अनेक पूर्णिमा के चंद्रमा एक साथ उदय हो गये हों... देखें अपने को इस परम आनंद के वायब्रेशन्स के बीच में। सामने देखें बापदादा हैं... उनके चारों ओर एक बहुत तेजस्वी आभामंडल है। बाबा दृष्टि दे रहे हैं...मस्तक पर तिलक लगाया... और याद दिलाया, स्मृति दिलाई... बच्चे, तुम ईश्वरीय शक्तियों से भरपूर मास्टर सर्वशक्तिवान हो... विजयी रत्न हो... स्वीकार कर लें दोनों को... मैं बहुत शक्तिशाली हूँ... माया पर विजयी हूँ... बाबा ने अपनी दुआओं भरे हाथ मेरे सिर पर रख दिये... और मैं वापिस आ गई।

कल्प-कल्प के विजयी हैं

एक बहुत सूक्ष्म चीज़ पर सभी ध्यान दें... बाबा ने बहुत बार कही हैं, उसको प्रैक्टिकल में अपने अनुभवों में लाना है। बाबा ने कहा, तुम कल्प-कल्प के विजयी हो। कल्प-कल्प तुमने इस माया को जीता है। हम केवल सुनकर खुश न हो जायें। चिंतन में लायें इसको। बाबा भी कह देते हैं रोज़ मुरली में। माया बहुत दुस्तर है, बड़ी पॉवरफुल है, इसको जीतना सहज नहीं है। परंतु उसने हमको इसे जीतने के लिए शक्तियां भी दे दी हैं। जीतना तब तक कठिन था जब तक जीतने का ज्ञान नहीं था और शक्तियां नहीं थीं। सर्वशक्तिवान से कनेक्शन जुट जाये तो उनकी शक्तियां आ जायेंगी। माया को जीतने का बल प्राप्त हो जायेगा। तो सभी अभ्यास करके देखें ज़रा, मैं कल्प-कल्प की विजयी आत्मा हूँ। अपने को एक-दो बार रोज़ याद दिला दें, इस शक्तिशाली माया को मैंने हर कल्प में जीता है। अब भी मेरी जीत निश्चित है। आप देखेंगे क्या होगा... इसको जीतने की शक्ति आ जायेगी।

अकबरपुर-उ.प्र.। विधायक राम अचल राजभर को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सोमा दीदी। साथ हैं ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. विशाल, ब्र.कु. शिवनायक तथा अन्य।

शांतिवन। ओम शान्ति मीडिया ऑफिस में ज्ञान चर्चा के पश्चात् फिल्म अभिनेत्री एवं मिस इंडिया सिमरन आहूजा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ओम शान्ति मीडिया के संपादक ब्र.कु. गंगाधर। साथ हैं डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके।

ठिकरी-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित सेवाकेन्द्र 'ज्ञान दर्शन भवन' का उद्घाटन करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ इंदौर की क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. आरती दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु. निशा बहन, ब्र.कु. छाया बहन तथा अन्य।

मुम्बई-सांताक्रूज़। आध्यात्मिक कार्यक्रम में 'सेल्फ ट्रान्सफोर्मेशन फॉर क्रियेटिंग गोल्डन भारत' विषय पर आयोजित सुंदर एवं भव्य झाँकी के उद्घाटन पश्चात् सुनील मोरे,शाखा प्रमुख,शिव सेना को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मीरा दीदी,सबज़ोन इंचार्ज,ब्रह्माकुमारीज़,सांताक्रूज़। झाँकी का कॉर्पोरेटर श्रीमति हेतल गाला, कॉर्पोरेटर एवं पूर्व डिप्टी मेयर श्रीमति अल्का केरकर तथा अन्य प्रतिष्ठित लोगों ने भी अवलोकन किया।

दिल्ली-लोधी रोड। केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो,सीबीआई,भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए आयोजित 'तनाव मुक्त जीवन शैली' विषयक गोष्ठी में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. पीयूष भाई।

पटियाला-पंजाब। नवनियुक्त डी.सी. साक्षी साहनी को बधाई देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राखी बहन। साथ हैं ब्र.कु. संजय भाई तथा अन्य।

कोरबा-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग केन्द्र एच.आई.जी. 10,आर.पी. नगर निहारिका में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में अशोक शर्मा,रिटा.आयुक्त,नगर पालिका निगम, प्रतिभा शर्मा,पार्षद,नगर पालिका निगम, वंदना गवेल,परियोजना अधिकारी,जिला पंचायत, जे.एम. पैकरा,अन्वेशक,जिला पंचायत, डॉ. तारा शर्मा,प्रोफेसर,मिनिमाता कन्या महाविद्यालय कोरबा, ब्र.कु. रचना बहन, ब्र.कु. जितेश्वरी बहन तथा बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

राय पिथौरागढ़-उत्तराखण्ड। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आई.टी.बी.पी. के जवानों के लिए आयोजित त्रिदिवसीय 'स्ट्रेस फ्री लिविंग' कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु. कनिका बहन, आईटीबीपी के कमाण्डेंट हरेन्द्र सिंह, सेकंड कमाण्डेंट भगवत सिंह राजपूत तथा आईटीबीपी के अन्य ऑफिसर्स व जवान। कार्यक्रम के पश्चात् ब्र.कु. कनिका बहन को आईटीबीपी के कमाण्डेंट हरेन्द्र सिंह ने मोमेन्टो भेंट किया।

मुज़फ्फरपुर-आमगोला रोड(बिहार)। किसान मेला के प्रांगण में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित शाश्वत यौगिक खेती चित्र प्रदर्शनी एवं आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन केन्द्रीय पूषा युनिवर्सिटी के वाइस चांसलर आर.सी. श्रीवास्तव व रिसर्च डायरेक्टर कुंडू जी ने फीता काटकर व दीप प्रज्वलित कर किया। इस मौके पर ढ़ोली कॉलेज के प्रिंसिपल ए.के. सिंह, ढ़ोली कॉलेज के असिस्टेंट प्रोफेसर एस.एस. प्रसाद तथा कई गणमान्य वैज्ञानिकों सहित ब्र.कु. पद्मा बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

मुम्बई-डोम्बिवली। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 'महिलाएं : नए भारत की ध्वज वाहक' कार्यक्रम में उपस्थित हैं दिव्यांग बच्चों के स्कूल की संचालिका श्रीमति राधिका गुप्ते, ज्ञान मंदिर स्कूल की प्राध्यापिका श्रीमति संगीता पाखले, कर्नाटक बंट संघ की चेयरपर्सन श्रीमति मंजुला शेट्टी, स्वामी सखा सम्पादिका सीमा वाखरे, भारतीय स्त्री शक्ति की सेक्रेट्री श्रीमति वृन्दा कुलकर्णी तथा ब्र.कु. बहनें।

पन्ना-म.प्र.। 'होली स्नेह मिलन' कार्यक्रम में शशि सिंह परमार, जिलाध्यक्ष, भाजपा महिला मोर्चा, निशा जैन,पूर्व प्राचार्य,शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय पन्ना, ब्र.कु. सीता बहन, संचालिका, पन्ना उप सेवाकेन्द्र तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

बिहार शरीफ-भैससुर(बिहार)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में कुर्मीचक ग्राम पंचायत की मुखिया सुधा देवी को सम्मानित करते हुए ब्र.कु. अनुपमा। साथ हैं ब्र.कु. सीमा बहन।

आत्मनिर्भर किसान अभियान का शुभारंभ

राजयोग जीवनशैली के साथ व्यवसाय से समग्र मनुष्य जाति को होगा लाभ : नितिन पटेल

महेसाना-गुज.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ के गॉडली पैलेस में आयोजित 'आत्मनिर्भर किसान अभियान' के शुभारंभ कार्यक्रम में गुजरात के पूर्व उप मुख्यमंत्री नितीन भाई पटेल ने कहा कि किसान पशुपालन का व्यवसाय योग और धर्म के रूप से करेगा तो देश एवं समग्र मनुष्य जाति को अनेक गुना लाभ होगा। आज खेती में प्रयोग होने वाला रासायनिक खाद धीमे ज़हर के रूप में मानव शरीर में फैलता जा रहा है जिस कारण वह अनेक रोगों का शिकार होने लगा है। ब्रह्माकुमारी बहनों की समर्थता एवं पहुँच को सारा देश पहचानता है, जिसको ध्यान में रखते हुए आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी आत्मनिर्भर किसान एवं प्राकृतिक खेती के अभियान के लिए ब्रह्माकुमारी संस्था से एक आश रखी है कि उनके अथक प्रयास से किसान कर्त्तव्यनिष्ठ बनें एवं स्वर्णिम भारत का निर्माण हो। कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा

राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी ने कहा कि प्राकृतिक एवं पारंपरिक खेती के साथ-साथ ब्रह्माकुमारीज़ के द्वारा परमात्म सानिध्य से खेती करने की नई पद्धति- शाश्वत यौगिक खेती सिखाई जाती है, जिससे किसानों में सकारात्मक विचारधारा पैदा होती है एवं अनेक दिव्य व आध्यात्मिक मूल्यों से उसका जीवन सम्पन्न बनता है। उन्होंने कहा कि यौगिक खेती का प्रशिक्षण देकर किसानों के मनोबल को मज़बूत करने का कार्य इस अभियान के द्वारा किया जायेगा। किसानों को व्यसनमुक्त, कुरीति-कुप्रथाओं से मुक्त करने के साथ अन्य कई लक्ष्य के साथ यह अभियान आरंभ हुआ है। परशोत्तम रुपाला,केन्द्रीय कैबिनेट मंत्री,मत्स्योद्योग, पशुपालन एवं दूध उद्योग,भारत सरकार, राघवजी भाई पटेल,कृषि राज्यमंत्री एवं दिलीप भाई संघाणी,चेयरमैन, एन.सी.यू.आई., इफको,गुजकोमासोल ने विडियो द्वारा अपनी शुभ कामनाएं व्यक्त की। इस अवसर पर कार्यक्रम में उपस्थित अशोक भाई चौधरी,चेयरमैन,दूध सागर डेरी,महेसाना, राम भाई पटेल,चेयरमैन, ए.पी.एम.सी.,महेसाना, प्रशान्त भाई पटेल,बिज़नेसमैन, भरत भाई पटेल,डेप्युटि डायरेक्टर,एग्रीकल्चर,किसान प्रशिक्षा केन्द्र एवं आत्मा प्रोजेक्ट,महेसाना ने भी अपनी शुभ कामनाएं व्यक्त की। मौके पर उपस्थित मेहमानों द्वारा अभियान यात्रियों को परमात्मा शिव का ध्वज, ज्ञान का प्रतीक कलश, पट्टे, बैज, कैप आदि पहनाकर, प्रभु प्रसाद देकर किसानों की सेवा के लिए प्रस्थान करवाया गया। आरंभ में ब्र.कु. कुसुम बहन ने सभी का स्वागत किया। ब्र.कु. धारा बहन ने सुंदर मंच संचालन किया। लगभग 300 भाई-बहनों ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम का लाभ लिया।

'प्रभु वरदान' दु:ख-अशांति से मुक्ति दिलायेगा

दीप प्रज्वलित करते हुए भामाशाह भोमराज सरावगी, राजकुमार राजगढ़िया रघुनंदन मित्तल, राजकुमार मोहता निर्मल बोधरा, भामाशाह गोपाल कृष्ण मित्तल,मुम्बई, भामाशाह मुरारीलाल सरावगी,बेंगलुरु, अति. मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट शालिनी शर्मा, मंगतुराम मोहता,पूर्व चेयरमैन,न.पा. राजगढ़, राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी,श्रीगंगानगर परिक्षेत्र, ब्र.कु. चन्द्रकांता बहन,भादरा, राजयोगी ब्र.कु. डॉ. गंगाधर भाई , ब्र.कु. बालू भाई, ब्र.कु. श्रीराम भाई, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शोभा बहन तथा अन्य।

राजगढ़-सादुलपुर(राज.)। वर्तमान समय में व्यक्ति अपने जीवन में अशांति और दुःख का अनुभव कर रहा है, क्योंकि सब ओर नकारात्मक विचार प्रभावी है। जीवन को सुखमय बनाने के लिए आध्यात्मिक जीवन जीना आवश्यक है, और इसकी शुरुआत हमें स्वयं से ही करनी होगी। उक्त विचार राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी,श्रीगंगानगर ने सादुलपुर क्षेत्र में ईश्वरीय सेवाओं की रजत जयंती, ब्रह्माकुमारीज़ के नये सेवाकेन्द्र के उद्घाटन व भामाशाह सम्मान समारोह में अध्यक्ष के रूप में व्यक्त किये। इस मौके पर मुख्य अतिथि भामाशाह भोमराज सरावगी, विशिष्ट अतिथि राजकुमार राजगढ़िया रघुनंदन मित्तल, राजकुमार मोहता निर्मल बोधरा, ब्र.कु. चन्द्रकांता बहन,भादरा, अति. मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट शालिनी शर्मा, मुख्य वक्ता राजयोगी ब्र.कु. डॉ. गंगाधर, संपादक,ओमशान्ति मीडिया,मा.आबू आदि उपस्थित रहे। अतिथियों को ब्र.कु. डॉ. गंगाधर भाई, ब्र.कु. बालू भाई व ब्र.कु. श्रीराम भाई ने ईश्वरीय सौगात भेंट की। विशेष रूप से ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र की स्थापना में तन,मन, धन से सहयोग प्रदान करने के लिए भामाशाह गोपाल कृष्ण मित्तल के सम्मान में अभिनंदन पत्र व प्रतीक चिन्ह उनके भाई रघुनंदन मित्तल को प्रदान की गई। 'प्रभु वरदान' भवन के उद्घाटन पर भामाशाह मुरारी लाल सरावगी ने विडियो कॉन्फ्रेन्सिंग से

संदेश देते हुए शुभ कामनायें ज्ञापित कीं। मुख्य वक्ता ब्र.कु. डॉ. गंगाधर भाई ने विश्व में शांति व समरसता बनाने में ब्रह्माकुमारीज़ की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए विचार परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि मनुष्य जागता है तो चिंता की रेखाओं के साथ और सोता है तो चिंता की चिता पर। आज हर मनुष्य का जीवन प्राचीन सभ्यताओं से कोसों दूर हो गया है। अब हमें पुनः आध्यात्मिक जीवनशैली अपनाने की ज़रूरत है। ब्रह्माकुमारी विद्यालय में मनुष्य के जीवन को सुव्यवस्थित करने के लिए राजयोग मेडिटेशन की सहज व सरल विधि सिखाई जाती है। जिससे मनुष्य अपने जीवन में चिंता, तनाव व दु:ख अशांति से निजात पाता है। उन्होंने कहा कि 'प्रभु वरदान' भवन सादुलपुर शहर व उससे सम्बंधित गांवों के लिए वास्तव में वरदान साबित होगा। अति. मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट शालिनी शर्मा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में सिखाया जा रहा राजयोग अवश्य ही मनुष्य के जीवन से तनाव और चिंताओं को दूर करेगा। उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन में आने वाले बदलाव का ज़िक्र करते हुए कहा कि शहर वासियों के लिए 'प्रभु वरदान' भवन प्रेरणा का स्रोत बनेगा। प्रवीण कुमार सिंघल,आरएएस ने भी अपने विचार व्यक्त किये। ब्र.कु. रानी बहन,पीलीबंगा ने राजयोग का अभ्यास कराया। प्रेम भाई, किशन भाई, दीपेश भाई, प्रेम प्रकाश भाई व जीतू भाई ने हास्य अभिनय एवं बहनों ने आध्यात्मिक नृत्य प्रस्तुत किया। स्थानीय सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. शोभा बहन ने आगंतुकों का स्वागत व मंगतुराम मोहता ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में राजस्थान, हरियाणा व महाराष्ट्र स्थित ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्रों से ब्र.कु. भाई-बहनों सहित बड़ी संख्या में क्षेत्र के लोगों ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम का लाभ लिया।

रजत जयंती महोत्सव पर निकाली भव्य शोभायात्रा

सादुलरपुर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र के रजत जयंती समारोह के अवसर पर प्रातः शोभा यात्रा निकाली गई। जिसमें ब्र.कु. भाई-बहनें तथा शहर की महिलाओं ने कलश धारण कर व हाथ में परमात्मा शिव का ध्वज लिये हुए शहर के मध्य से करीब पाँच कि.मी. की यात्रा की। इस दौरान शहर के विभिन्न संगठनों ने पुष्प वर्षा कर यात्रियों का अभिवादन किया।

सजगता के अभाव में दुर्घटनाओं पर काबू पाना सम्भव नहीं : गृह सचिव

'सड़क सुरक्षा से जन रक्षा' सड़क सुरक्षा मोटर बाइक यात्रा

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के यातायात प्रभाग द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' प्रोजेक्ट के अन्तर्गत 'सड़क सुरक्षा से जन रक्षा' विषय पर आयोजित सड़क सुरक्षा मोटर बाइक यात्रा के शुभारंभ पर गृह सचिव अरुण देव गौतम,आई.पी.एस. ने कहा कि ज़्यादातर दुर्घटनाएं वाहन चालक की लापरवाही से होती हैं। उसे यह समझ ही नहीं होती कि उसका एक कृत्य कितने लोगों को बेसहारा बना देगा! सजगता के अभाव में दुर्घटनाओं पर काबू पाना सम्भव नहीं है। उन्होंने समारोह के आयोजन एवं ब्रह्माकुमारीज़ के अन्य प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि स्कूलों, कॉलेजों और विभिन्न संस्थानों में कार्यक्रम आयोजित कर लोगों को सचेत करने की जरुरत है। इन्दिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चन्देल ने कहा कि वर्तमान समय बच्चों को यदि यातायात नियमों की जानकारी दी जाए तो वह बड़ों को उन नियमों का पालन करने के लिए बाध्य कर सकते हैं। नियमों के पालन का संस्कार बनाना ज़रूरी है। ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी ने कहा कि गाड़ी चलाते समय मन में किसी प्रकार का तनाव न हो, इसके लिए राजयोग मेडिटेशन कारगर तरीका है। साथ ही उन्होंने लोगों को स्वयं की और परमात्मा की पहचान प्राप्त करने के लिए राजयोग शिविर में भाग लेने का निमंत्रण दिया। अति. पुलिस अधीक्षक, ट्रैफिक,एम.आर.मण्डावी ने जल्दबाज़ी से बचने की सलाह देते हुए कहा कि कहीं जाने के लिए समय से पहले घर से निकलना चाहिए। वाहन की गति को नियंत्रित रखें तो दुर्घटनाओं में कमी हो सकती है। यातायात प्रभाग के मुख्यालय समन्वयक ब्र.कु. सुरेश भाई,माउण्ट आबू ने बाइक रैली का उद्देश्य बताते हुए कहा कि हमें प्रतिज्ञा करनी है कि हम स्वयं तो यातायात नियमों का पालन करेंगे ही, दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। ब्र.कु. कविता दीदी,मुम्बई ने कहा कि स्टेयरिंग पर नियंत्रण के लिए मन पर नियंत्रण ज़रूरी है। ब्र.कु. सरिता दीदी,धमतरी ने सभी का स्वागत किया। ब्र.कु. विद्या दीदी,अम्बिकापुर ने यातायात नियमों का पालन करने की प्रतिज्ञा करायी तथा संचालन ब्र.कु. मंजू दीदी,बिलासपुर ने किया।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/21-23, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2021-23, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 3rd May, 2022
स्वामी - राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन, प्रकाशक एवं सम्पादक - गंगाधर नरसिंघानी, मुद्रक - श्री मुकेश मंगल, डी.बी. कॉर्प.लि. द्वारा भास्कर प्रिन्टिंग प्रेस,शिवदासपुरा, टोंक रोड,जयपुर से मुद्रित एवं ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड(राज.)- 307510
See Latest News - www.omshantimedia.org